सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

Savitribai Phule Pune University, Pune

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 [NEP] के अंतर्गत द्वितीय वर्ष कला हिंदी का पाठ्यक्रम

Under The New Education Policy 2020 [NEP] SYBA Hindi Course

बी.ए.द्वितीय वर्ष के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम का ढाँचा

Credit Framework for Under Graduate (UG) (2025-26)

संबद्ध महाविद्यालयों के लिए

For Affiliated colleges

द्वितीय वर्ष कला

तृतीय एवं चतुर्थ अयन

PROGRAMME OUTCOMES (POs):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थियों में विविध क्षमताओं का विकास होगा।

- PO 1 Disciplinary Knowledge
  हिंदी भाषा और साहित्य के बुनियादी तत्व समझ पाएंगे।
- PO 2 Communication Skills
  श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन कौशल से अवगत होंगे।
- PO 3 Critical Thinking
  आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होगी।
- PO 4 Problem Solving
  सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, भाषिक समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न करेंगे।
- PO 5 Analytical reasoning
  प्राप्त जानकारी का तटस्थता से आस्वादन और विश्लेषण करना सीखेंगे।
- PO 6 Research related Skills
  अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक गुणों का विकास होगा।
- PO 7 Cooperation / Team work
  लक्ष्य प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयास करना सीखेंगे।
- PO 8 Scientific reasoning
  प्राप्त ज्ञान का वैज्ञानिक दृष्टि से परीक्षण अथवा प्रस्तुतिकरण करना सीखेंगे।
- PO 9 Reflective thinking
  वैचारिक गंभीरता अथवा गहराई से विचार करने की प्रवृत्ति विकसित होगी।
- PO 10 Self-directed learning
  संबंधित शैक्षिक कार्य का स्वयं अध्ययन करने के लिए बढ़ावा मिलेगा।
- PO 11 Information / Digital literacy
  दृकश्राव्य माध्यमों की सहायता से अध्ययन करेंगे।
- PO 12 Multicultural Competence
  सांस्कृतिक वैविध्य समझने की क्षमता विकसित होगी।
- PO 13 Moral / Ethical Values
  नैतिक मूल्य विकसित होने अथवा आत्मसात करने में सहायता मिलेगी।
- PO 14 leadership Readiness
  विषय से संबंधित क्षेत्र में नेतृत्व करने के कौशल प्राप्त होंगे।
- PO 15 life-long learning
  निरंतर अध्ययन और अनुसंधान कार्य करने में रुचि निर्माण होगी।

(Program Specific Outcomes (PSOs):
पाठ्यक्रम अध्ययन की विशिष्ट निष्पत्ति

- **PSO 1 Domain Knowledge**

  हिंदी साहित्य अथवा संबंधित पाठ्यक्रम विषयक विविध अवधारणा समझेंगे तथा उसका सौंदर्यशास्त्रीय आकलन होगा।
- **PSO 2 Professional Skills**

  भाषिक कौशल आत्मसात होंगे और तंत्रज्ञान का भाषिक व्यवहार में कुशलतापूर्वक प्रयोग कर सकेंगे।
- **PSO 3 Research**

  हिंदी भाषा और साहित्य संबंधी अनुसंधान कार्य हेतु प्रेरणा मिलेगी।
- **PSO 4 Social Responsibility**

  सामाजिक जिम्मेदारियों का एहसास होगा।
- **PSO 5 Personality Development**

  व्यक्तित्व विकास में सहायता होगी।

अनुक्रम

तृतीय अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/ Practical	कर्मांक	पृष्ठ क्रमांक
HIN - 201 - MJ	Mojor core	हिंदी साहित्य का इतिहास	सैद्धांतिक	4	
HIN - 202 - MJ		हिंदी साहित्य का इतिहास प्रत्यक्ष कार्य	प्रात्यक्षिक	2	
HIN – 221 - VSC	VSC	अनुवाद : स्वरूप और भेद	सैद्धांतिक	2	
HIN – 231 - FP	FP	क्षेत्र परियोजना	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 241 - MN	Minor	हिंदी लघु कथा	सैद्धांतिक	2	
HIN - 242 - MN		लघुकथा लेखन प्रत्यक्ष कार्य	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 221 - OE	GE/OE	हिंदी गीत और एकांकी	सैद्धांतिक	2	
HIN - 200 - IKS	IKS	हिंदी भक्ति काव्य	सैद्धांतिक	2	
HIN – 231 - AEC	AEC	हिंदी भाषा क्षमता संवर्धन भाग - I	सैद्धांतिक	2	

चतुर्थ अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/ Practical	कर्मांक	पृष्ठ क्रमांक
HIN - 251 - MJ	Major Core	भारतीय काव्यशास्त्र	सैद्धांतिक	4	
HIN - 252 - MJ		भारतीय काव्यशास्त्र प्रत्यक्ष कार्य	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 271 - VSC	VSC	अनुवाद व्यवहार	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 281 - CEP	CEP	सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 291 - MN	Minor	भारतीय बाल कहानियाँ	सैद्धांतिक	2	
HIN - 292 - MN		बाल कहानियाँ लेखन	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 271 - OE	GE/OE	हिंदी गीत और एकांकी लेखन	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 251 - SEC	SEC	व्यावहारिक हिंदी	प्रात्यक्षिक	2	
HIN – 281 - AEC	AEC	हिंदी भाषा क्षमता संवर्धन भाग - II	सैद्धांतिक	2	

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन
Major core course 4 credit theory

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 201 - MJ	Mojor core	हिंदी साहित्य का इतिहास	सैद्धांतिक	T	4

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (Aims) :

हिंदी साहित्य के इतिहास पाठ्यक्रम का मुख्य लक्ष्य छात्र को हिंदी साहित्य के विकास की जानकारी प्रदान करना है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्रों को विभिन्न कालखंडों, साहित्यिक विधाओं, प्रमुख लेखकों और उनकी रचनाओं तथा हिंदी साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों से अवगत कराना। छात्र हिंदी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल आदि) का अध्ययन करके साहित्यिक प्रवृत्तियों की समझ विकसित करनी है। इस पाठ्यक्रम में प्रमुख हिंदी लेखकों और उनकी रचनाओं का भी अध्ययन शामिल है, जिससे छात्रों को साहित्य के विकास में उनके योगदान और उनकी रचनाओं के साहित्यिक और सामाजिक संदर्भों को समझाना है। यह पाठ्यक्रम साहित्य और समाज के अंत:संबंध कों दृढ़ करता है। जिससे छात्रों को साहित्य के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को समझने में मदद मिलती है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcoms)

1. छात्रों को हिंदी साहित्येतिहास लेखन का परिचय होगा।
2. हिंदी साहित्येतिहास के काल विभाजन तथा नामकरण से अवगत कराना।
3. छात्र हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियों का परिचय प्राप्त करेंगे।
4. छात्रों को आदिकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों का बोध होगा।
5. आदिकाल तथा भक्तिकाल के काव्य सौंदर्य से परिचित होंगे।
6. भक्तिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराओं से परिचित होंगे।
7. रीतिकाल की भिन्न काव्यधाराओं से अवगत होंगे।
8. रीतिकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों से परिचित होंगे।
9.आधुनिक हिंदी गद्य के प्रमुख गद्यकारों तथा गद्य विधाओं के विकासक्रम से अवगत होंगे।
10. छात्र आधुनिक गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ- उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध आदि से अवगत होंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 2= Poorly Met, Blank = Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-Directed Learning	Information /Digital Literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	Life-long Learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	2	2	2	3	2	2	2	3	3	2	3	3	2	2	2	3	2	2	3	2
CO-2	2		2	2	2	2	2	3	2	2	3	3	2	2		3	2	2	2	2
CO-3	2	3	2	2	2	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	3	2	2	2	
CO-4	2		2	3	2	2	2	3	3	2	2	3	2	2	2	3	2	2	3	
CO-5	2	2	2			2		3	2	2	3	3	2	2		3	2	2	3	2
CO-6	2			3			2	3	3	2	3	3		2	2	3		2	3	
CO-7	2		2	2	2	2	2	3	2	2	3	3	2	2		3	2	2		2
CO-8	2	3	2	2	2	2	2	3	2	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2
CO-9	2		2	2	2	2	2	3	2	2	2	3	2	2	2	3	2	2		2
CO-10	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2
Wgt Avg	2	2.4	2	2.3	2	2	2.1	3	2.3	2	2.7	3	2	2	2	3	2	2	2.5	2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यक्रम	तासिकाएँ
इकाई I	**आदिकाल सामान्य परिचय** 1. हिंदी साहित्य की प्रासंगिकता और महत्व। 2. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा। 3. आदिकाल का नामकरण और काल विभाजन। 4. सिद्ध साहित्य का सामान्य अध्ययन। 5. नाथ साहित्य का सामान्य परिचय। 6. रासो साहित्य का सामान्य अध्ययन। 7. आदिकालीन लोक साहित्य का सामान्य परिचय।	15
इकाई II	**मध्यकाल (भक्तिकाल तथा रीतिकाल का सामान्य परिचय)** 1. संत काव्य धारा का प्रवृत्तिगत अध्ययन। 2. सूफी काव्य धारा का प्रवृत्तिगत अध्ययन। 3. कृष्ण भक्तिधारा का प्रवृत्तिगत अध्ययन। 4. राम भक्तिधारा का प्रवृत्तिगत अध्ययन।	15

	5. रीतिबद्ध काव्य का सामान्य अध्ययन। 6. रीतिसिद्ध काव्य का सामान्य अध्ययन। 7. रीतिमुक्त काव्य का सामान्य अध्ययन।	
इकाई III	**आधुनिक काल (सामान्य परिचय)** 1. हिंदी नवजागरण। 2. हिंदी गद्य का विकास। 3. राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्य धारा का सामान्य परिचय। 4. छायावादी काव्य का प्रवृत्तिगत अध्ययन। 5. प्रगतिवादी काव्य का प्रवृत्तिगत अध्ययन। 6. प्रयोगवादी काव्य का प्रवृत्तिगत अध्ययन।	15
इकाई IV	**कथा साहित्य (सामान्य परिचय)** 1. उपन्यास और यथार्थवाद। 2. हिंदी उपन्यास साहित्य का उद्‌भव और विकास। 3. हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास। 4. हिंदी नाटक का उद्‌भव और विकास।	15

अंक विभाजन:

आंतरिक मूल्यांकन : 30 %

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा।
2. 15 अंकों की अध्ययन यात्रा/पुस्तक परीक्षण/क्षेत्रीय भेंट/ लेखक आदि का साक्षात्कार/समुह चर्चा, छात्र संगोष्ठी।

सत्रांत परीक्षा : 70 %

चार इकाइयों पर अथवा में एक-एक प्रश्न। कुल चार प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य। $4 \times 15 = \mathbf{60}$

प्रश्न 5 : वस्तुनिष्ठ बहु पर्यायी $10 \times 1 = \mathbf{10}$

पहली और दूसरी इकाई पर दो-दो और तीसरी और चौथी इकाई पर तीन-तीन बहु पर्यायी प्रश्न।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य की भूमिका - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह
4. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र
5. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - गुलाबराय
6. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
7. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास - विश्वनाथ त्रिपाठी
8. मध्ययुगीन काव्य - डॉ. सत्यनारायण सिंह
9. मध्य युगीन काव्य साधना - डॉ. रामचंद्र तिवारी
10. हिंदी साहित्य का इतिहास - प्रो. माधव सोनटक्के

❀✿❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन
Major Core Course 2 Credit Practical

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 202 - MJ	Mojor Core	हिंदी साहित्य का इतिहास प्रत्यक्ष कार्य	प्रात्यक्षिक	P	2

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (Aims) :

मनुष्य, समुदाय, तथा राष्ट्र की अपने इतिहास के प्रति जिज्ञासा स्वाभाविक है। इस जिज्ञासा का समाधान किसी समाज और देश के साहित्य के अध्ययन से प्राप्त होता है। साहित्य इतिहास के अध्ययन से विभिन्न युगों, धाराओं व रचनाकारों के साहित्य की विशिष्टताओं को उल्लेखित करना। समकालीन साहित्य के विविध रूपों, आंदोलनों, विमर्शों के माध्यम से अपने युग का बोध भी होता है। हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन से छात्रों में हिंदी साहित्य के सौंदर्य, कला तथा वैचारिक मूल्यों के प्रति विवेक का निर्माण करना है। इस पाठ्यक्रम में विभिन्न युगों के महान साहित्यकारों के जीवन और रचना कर्म के बारे में अध्ययन किया जाएगा। इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र को हिंदी साहित्य की विभिन्न धाराओं व साहित्यिक परपंराओं से परिचय के साथ-साथ हिंदी साहित्य के बदलाव के बिंदुओं से अवगत कराना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcoms)

1. हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों का परिचय प्राप्त करेंगे।
2. आदिकाल के कवियों के काव्यगत विशेषताओं कों समझेंगे।
3. भक्तिकाल के कवियों के काव्य योगदान कों समझेंगे।
4. रीतिकाल के कवियों के काव्य का अध्ययन करेंगे।
5. आधुनिक काल के कवियों के काव्य का अध्ययन करेंगे।
6. आधुनिक हिंदी गद्य के प्रमुख गद्यकारों तथा गद्य विधाओं के विकासक्रम से अवगत होंगे।
7. आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों तथा उपलब्धियों से परिचित होंगे।
8. आधुनिक गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ- उपन्यास, कहानी, नाटक आदि से अवगत होंगे।
9. प्रत्यक्ष कार्य करने छात्रों में प्रस्तुति कौशल विकसित होंगे।
10. अध्ययन यात्रा के बहाने छात्रों को वहाँ की भाषा, समाज और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होगा।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 2= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-Directed Learning	Information /Digital Literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	Life-long Learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3	2	2	2	2	2	3	2	3	2	2	3	2	2	2	3	2	2	2	2
CO-2	3	2	2	2	2	2	3	2	2	2	2	3	2	2		3	2	2	2	2
CO-3	3	2		2	2	2	3	2	3	2	2	3	2	2	2	3	2	2	2	3
CO-4	3			2	2	2	2	2	3	2	2	3	2	2	2	2	2	2	2	3
CO-5	3	2	2	2		2	2		2	2	2	3	2	2		3	2	2	3	2
CO-6	3	2					2		3	2	2			2	2	3		2	3	2
CO-7	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2		3	2	2	3	2
CO-8	3	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	3	2	2	2	3	2	2	2	2
CO-9	3		2	2	2	2	2	2	3	2	2	3	2	2	2	2	2	2	3	2
CO-10	3	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	2	2	2	2		2	2	2	2
Wgt Avg	3	2.3	2	2	2	2	2.3	2	2.7	2	2	2.8	2	2	2	2.5	2	2	2.4	2.2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	1. आदिकाल के प्रमुख कवि : चंदबरदाई, अमीर खुसरो, हेमचंद्र, विद्यापति। 2. मध्यकाल (भक्ति काल तथा रीतिकाल के प्रमुख कवि): कबीरदास, मलिक मोहम्मद जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, रैदास, केशवदास, बिहारी, घनानंद, भूषण, नृपशंभु।	30
इकाई II	1. **आधुनिक काल के प्रमुख रचनाकार** : भारतेंदु हरिश्चंद्र ,बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, मैथिली शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर, सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय, नागार्जुन। 2. **कथा साहित्य के प्रमुख रचनाकार**- **प्रमुख उपन्यासकार :** प्रेमचंद, जैनेंद्र ,यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु। **प्रमुख कहानीकार:** प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय, कृष्णा सोबती। **प्रमुख नाटककार:** भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, जगदीशचंद्र माथुर, मोहन राकेश।	30

दोनों इकाइयों के रचनाकारों एवं रचनाओं का परिचय लेखन, रचना मूल्यांकन, प्रस्तुति, अध्ययन यात्रा, समकालीन रचनाकारों से भेंट आदि प्रत्यक्ष कार्य छात्रों से करवाना अपेक्षित है ।

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30% (15 **अंक**)

1) 15 अंकों के लिए अध्ययन यात्रा/ पुस्तक परीक्षण/ क्षेत्र भेंट/ लेखक/कवि का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी/ मौखिक परीक्षा/ लिखित परीक्षा / परियोजना / क्षेत्रीय भेंट / ग्रंथालय कार्य / समूह चर्चा / प्रस्तुति / शोध परियोजना आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70% (35 **अंक**) **प्रात्यक्षिक सत्रांत परीक्षा।**

1. **प्रश्न** 1 **और** 2 - इकाई I और II पर 10 + 10 = 20 अंको के लिए संबंधी कौशलाधारित कार्य छात्रों से प्रत्यक्ष करवाना होगा।
2. **प्रश्न** 3 - इकाई I और II पर रचनाकार अथवा संबंधित रचनाकार की किसी एक रचना की समीक्षा लिखकर प्रस्तुति करनी अपेक्षित है। इसके लिए 15 अंक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य की भूमिका - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह
4. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र
5. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - बाबू गुलाबराय
6. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
7. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास - डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
8. मध्ययुगीन काव्य - डॉ. सत्यनारायण सिंह
9. मध्य युगीन काव्य साधना - डॉ. रामचंद्र तिवारी
10. हिंदी साहित्य का इतिहास - प्रो. माधव सोनटक्के

❀✿❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 221 - VSC	VSC	अनुवाद : स्वरूप और भेद	सैद्धांतिक	T	2

लक्ष्य (Aims) :

वर्तमान युग अनुवाद का युग माना जाता है। इसमें वैदिक युग से लेकर वर्त्तमान के पुनःकथन आते हैं। अनुवाद के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। वस्तुत: आरंभ में अनुवाद का स्वरुप स्वांत सुखी तक सीमित था लेकिन वर्तमान में यह व्यवसाय या प्रयोजन बन गया है। समूचे विश्व में अनुवाद की महत्ता किसी न किसी रूप में अवश्य महसूस होती है। राजनीति, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, प्रोद्योगिकी, धार्मिक, सामाजिक, प्रशासनिक वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में अनुवाद का उपयोग हो रहा है। विश्व की सभ्यताओं एवं सांस्कृतियों में अनुवाद की भूमिका हमेशा ही उल्लेखनीय रही है।

चूँकि भारत बहुभाषी और बहु सांस्कृतिक देश है। अतः इसकी अखंडता और सांस्कृतिक- एकसूत्रता भारतीय भाषाओं में जो साहित्य है, यदि वह आपसी भाषाओँ में लिखा जा रहा है तो वह अनूदित होकर पाठकों के सम्मुख आता है, तो भारतीयता की अवधारणा स्वयं ही दृढ़ हो जाएगी। इसलिए स्नातक स्तर के प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए अनुवाद पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes) :

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

1. छात्र अनुवाद की अवधारणा समझेंगे।
2. अनुवाद का स्वरूप एवं भेद सीखेंगे।
3. अनुवाद करने के लिए आवश्यक दृष्टि विकसित होगी।
4. अनुवादक के लिए आवश्यक गुणों से अवगत होंगे।
5. अनुवाद की समस्याओं को समझेंगे।
6. साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप समझेंगे।
7. अनुवाद में समतुल्यता सिद्धांत के महत्व को समझेंगे।
8. साहित्य और साहित्येतर अनुवाद में निहित अंतर को समझेंगे।
9. सांस्कृतिक विविधता जानने के लिये अनुवाद का महत्व समझ में आएगा।
10. अनुवाद कार्य से निरंतर अध्ययन करने की प्रेरणा मिलेगी।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical reasoning	Research-related Skills	Cooperation/ Team work	Scientific reasoning	Reflective thinking	Self-directed learning	Information / Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skill	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3							2		1					1	2				1
CO-2	3		2		2			2		2					1	2			2	1
CO-3	3				2	1				2					1	2		1		1
CO-4	3	2			2			2	1	2	1				1	2	1		1	1
CO-5	3			3						1					1	2				1
CO-6	3												2	1	1	2				1
CO-7	3														1	2				1
CO-8	3			3		1	1	2	1						1	2	1	1		1
CO-9	3											3		1	1	2				1
CO-10	3						1				1		1		1	2			2	1
Wgt Avg	3	2	2	3	2	1	1	2	1	2	1	3	2	1	1	2	1	1	2	1

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई - I	1. अनुवाद : अर्थ,परिभाषा और स्वरूप 2. अनुवाद प्रक्रिया के सोपान 3. अनुवाद : सहायक सामग्री 4. स्रोत भाषा,लक्ष्य भाषा 5. समतुल्यता का सिद्धांत 6. अनुवादक के गुण	15
इकाई - II	1. अनुवाद के प्रकार 2. साहित्यिक अनुवाद 3. काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्यानुवाद 4. साहित्येतर अनुवाद 5. विज्ञापन,समाचार पत्र,संविधान, अधिनियम, अध्यादेश, बैंक, रेल, रक्षा, कृषि, खेल और विधि अनुवाद आदि का सामान्य परिचय	15

अंक विभाजन

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/अनुवाद का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रश्न 1 - इकाई i पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। (शब्द सीमा 300)
   2 x 7 = 14
2. प्रश्न 2 - इकाई ii पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। 2 x 7 = 14
3. प्रश्न 3 - दोनों इकाइयों पर सात बहु पर्यायी प्रश्न। 7 x 1 = 7

संदर्भ ग्रंथ :

1. अनुवाद सिध्दांत और प्रयोग प्रो. जे. गोपीनाथ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
2. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रयोग - सं. नगेंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली,
4. अनुवाद विज्ञान की भूमिका कृष्णकुमार गोस्वामी
5. अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी
6. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

❀❀❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन
FP/OJT/CEP Course 2 Credit (FP)

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 231 - FP	FP	क्षेत्र परियोजना	प्रात्यक्षिक	P	2

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (Aims):

'क्षेत्र परियोजना' (Field Project) का शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यह केवल पुस्तक के ज्ञान को समझने में सहायक नहीं होता बल्कि समाज के वास्तविक अनुभवों से भी साक्षात्कार करता है। जब छात्र किसी विशेष क्षेत्र में जाकर प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं, तो उनका ज्ञान और भी गहन, व्यावहारिक और सार्थक बनता है। क्षेत्र परियोजना के माध्यम से वे समाज, पर्यावरण या स्थानीय किसी विशेष समस्या को नज़दीक से देखते हैं, समझते हैं और उस पर विचार करते हैं। इस प्रक्रिया में छात्रों का मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास होता है। सामग्री संकलन, साक्षात्कार, निरीक्षण और परियोजना लेखन जैसी गतिविधियाँ उन्हें शोध की दृष्टि प्राप्त होती है। साथ ही इसके उनके आत्मविश्वास, संवाद कौशल और निर्णय लेने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। क्षेत्र परियोजना छात्रों को एक सजग नागरिक और संवेदनशील मानव बनने के लिए प्रेरित करती है। क्षेत्र परियोजना का मुख्य उद्देश्य उन्हें भाषा, साहित्य और संस्कृति के वास्तविक, सामाजिक और क्षेत्रीय स्वरूप से परिचित कराना है। यह परियोजना छात्रों को पाठ्य ज्ञान से परे जाकर जीवन और समाज से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने का अवसर देती है। क्षेत्र परियोजनाओं के माध्यम से छात्र को लोकजीवन में प्रचलित सांस्कृतिक रूपों जैसे- लोकगीत, लोकसंगीत, लोकोक्तियों, लोककथा और मिथक कथाओं का संकलन कर उनके भाषिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक पहलुओं पर विचार करने के लिए प्रेरित करना है। साथ ही तुलनात्मक शब्दकोश निर्माण जैसे कार्यों के माध्यम से वे विभिन्न बोलियों, भाषाओं और उनके आपसी संबंधों को समझने का प्रयास करेंगे। छात्रों में शोध दृष्टि, भाषा संवेदना, सांस्कृतिक चेतना और विश्लेषण क्षमता का विकास करना है। वे हिन्दी भाषा और साहित्य को केवल अकादमिक दृष्टिकोण से नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में भी समझ विकसित करनी है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

1. छात्र लोकभाषा और संस्कृति को समझने का तरीका सीखेंगे।
2. छात्र शोध करने की प्रारंभिक विधियाँ सीख पाएंगे।
3. छात्र संकलित सामग्री का विश्लेषण करना जानेंगे।
4. छात्र प्रभावी रिपोर्ट और रचनात्मक लेखन करना सीखेंगे।

5. छात्र लोगों से संवाद करने की कला में निपुण होंगे।
6. छात्र विभिन्न बोलियों और हिन्दी भाषा में अंतर समझ सकेंगे।
7. छात्र लोक जीवन और परंपराओं के प्रति संवेदनशील बनेंगे।
8. छात्र डिजिटल उपकरणों का प्रयोग करना सीखेंगे।
9. छात्र समूह में कार्य करना और नेतृत्व करना जानेंगे।
10. छात्र हिंदी विषय की व्यावहारिक उपयोगिता का अनुभव करेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related Skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-directed learning	Information /Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3					2						2	2		2	3	2		2	2
CO-2	3					2						2	2		2	3	2			
CO-3	3		2		2	2			2	2	2				3	3	2			
CO-4	3	2	2		2	2			2	2	2				3	3	2			
CO-5	3	3												2	2	3	3			2
CO-6	3					2		1				2	2		2	3	3			2
CO-7	3												2		2	3			3	
CO-8	3					2	2			2	2				2	3			2	3
CO-9		2		2	2		3	1							2	3			2	3
CO-10		2					2								2	3	3	2	2	2
Wgt Avg	3	2	2	2	2	2	2.3	1	2	2	2	2	2	2	2	3	2.4	2	2.2	2.3

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	1. लोक संगीत संकलन और विश्लेषण। 2. लोकगीत संकलन और विश्लेषण। 3. तुलनात्मक शब्द संकलन।	30
इकाई II	1. मिथक कथा संकलन और विश्लेषण। 2. लोककथा संकलन और विश्लेषण। *इसके अलावा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार क्षेत्र परियोजना हेतु विषय दिए जा सकते हैं।	30

अंक विभाजन:

आंतरिक मूल्यांकन 30% (15 अंक)

1. 15 अंकों के लिए क्षेत्र भेंट/लोक कलाकार/लेखन का साक्षात्कार/लोक गीत/लोक साहित्य से संबंधित सामग्री संकलन/छात्र गोष्ठी/लघु फिल्म निर्माण/वृत्तचित्र निर्माण आदि।

सत्रांत परीक्षा 70% (35 अंक)

1. संबंधित विषय में से किसी एक विषय पर क्षेत्र भेंट कर 25 पृष्ठों तक परियोजना लेखन कर जमा करना आवश्यक है अथवा संबंधित विषय पर लघु फिल्म निर्माण करना। छात्र को परियोजना से संबंधित मौखिकी देनी होगी। अंक विभाजन परियोजना लेखन 25 अंक और मौखिकी के लिए = 10 अंक दिए जा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

2. लोक साहित्य का सौंदर्यशास्त्र- डॉ. नामवर सिंह
3. लोक साहित्य और संस्कृति - डॉ. रामकुमार वर्मा
4. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ. रामनिवास शर्मा
5. भारतीय लोक परंपरा और संस्कृति - डॉ. कपिल कपूर
6. हिंदी लोक साहित्य: स्वरूप और सरोकार - डॉ. शंभुनाथ
7. भारतीय लोक साहित्य का इतिहास - रामनाथ सुमन

❀✿❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 241 - MN	Minor	हिंदी लघुकथा	सैद्धांतिक	T	2

लक्ष्य (Aims) :

लघुकथा की सुदीर्घ का परंपरा है। विविध बोध कथाएँ और नीति परक कथाओं के द्वारा इस विधा का पर्याप्त विकास हुआ है। कम शब्दों में अधिक सघन आशय कहने की क्षमता लघुकथा में होती है। लघुकथा का शिल्प सौंदर्य उसकी बनावट, कथ्य आदि में निहित होता है। वर्तमान में लघुकथाओं का प्रचुरतम् लेखन हो रहा है। थोड़े ही समय में गहन संदेश लघुकथाओं के द्वारा दिए जाते हैं। छात्र इस पाठ्यक्रम के द्वारा महज लघुकथाओं की रचना-प्रक्रिया से ही रू-ब-रू नहीं होंगे बल्कि विज्ञान और तकनीकी के चमकते दौर में मानवीय मूल्य, भारतीय संस्कृति, वर्तमान बोध आदि बातों को अपने जीवन में स्थान देने के लिए सक्षम बन सकेंगे।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

1. छात्र लघुकथा विधा, इतिहास और पृष्ठभूमि से परिचित होंगे।
2. लघु कथाकारों का परिचय प्राप्त करेंगे।
3. लघु कथाओं की तात्विक समीक्षा कर सकेंगे।
4. लघु कथाओं का मूल्यांकन एवं विश्लेषण कर सकेंगे।
5. लघुकथा का महत्व एवं उद्देश्य समझेंगे।
6. लघुकथा की भाषा एवं शैली से परिचित होंगे।
7. लघुकथा लेखन के प्रति प्रेरित होंगे।
8. छात्र लघुकथा में निहित विभिन्न मानवीय मूल्यों से अवगत होंगे।
9. छात्रों को उत्तरदायित्व बोध प्राप्त होगा।
10. छात्रों का जीवन विषयक वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होगा।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical reasoning	Research-related Skills	Cooperation/ Team work	Scientific reasoning	Reflective thinking	Self-directed learning	Information / Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skill	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3	3				1						2			1	1		1		1
CO-2	3	3				1						2			1	1	2	1		1
CO-3	3	3	3		3	1		3		2					1	1	2	1		1
CO-4	3	3	3	2	3	1		3		2		2		2	1	1		1		1
CO-5	3	3	3	2		1			3				3		1	1		1	3	1
CO-6	3	3	3			1						2			1	1	2	1		1
CO-7	3	3				1				2					1	1	2	1		1
CO-8	3	3		2	3	1	2		3	2		2	3	2	1	1		1	3	2
CO-9	3	3	3	2	3	1	2		3	2		2	3	2	1	1		1	3	2
CO-10	3	3	3	2	3	1		3	3	2		2	3	2	1	1		1	3	2
Wgt Avg	3	3	3	2	3	1	2	3	3	2		2	3	2	1	1	2	1	3	1.3

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय			तासिकाएँ
इकाई - I	लघुकथा		लघुकथाकार	15
	1. दो मित्र	2. एक प्रश्न	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	
	1. चोर की ममता	2. मूक शिक्षण	विष्णु प्रभाकर	
	1. अपना पराया	2. उपदेश	हरिशंकर परसाई	
	1. बोहनी	2. प्राथमिकता	चित्रा मुद्गल	
	1. ठंडी रजाई	2. ओएसिस	सुकेश साहनी	
इकाई - II	लघुकथा		लघुकथाकार	15
	1. गंगा स्नान	2. ऊंचाई	रामेश्वर कांबोज	
	1. समय का पहिया घूम रहा है	2. दौड़	मधुदीप	
	1. वैष्णव जन तो तेने कहिए	2. होड़ की दौड़	कनक हरलालका	
	1. श्रम सौंदर्य	2. पानी के पेड़	ज्योति जैन	
	1. जिम्मेदारी	2. जंगल और शहर।	डॉ. मिथिलेश अवस्थी	

अंक विभाजन

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/लघु कथा लेखक का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी/समुह चर्चा आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रश्न 1 - इकाई i पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। (शब्द सीमा 300) 2 x 7 = 14
2. प्रश्न 2 - इकाई ii पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। 2 x 7 = 14
3. प्रश्न 3 - दोनों इकाइयों पर सात बहु पर्यायी प्रश्न। 7 x 1 = 7

संदर्भ ग्रंथ :

1. चिंतन -अनुचिंतन - डॉ.बलराम अग्रवाल, राही प्रकाशन, दिल्ली संस्करण-2020
2. लघुकथा आकार और प्रकार - अशोक भाटिया, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, संस्करण-2019
3. समकालीन लघुकथा : सृजन और विचार - कमल चोपडा, कौशिक पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण-2019
4. आधुनिक हिंदी लघुकथा का पूर्वार्ध काल - डॉ. रामकुमार घोटड , साहित्यागार जयपुर, संस्करण-2020
5. बीसवीं सदी का हिंदी लघुकथा इतिहास - डॉ. रामकुमार घोटड, साहित्यागार जयपुर, संस्करण-2021
6. सेवानिवृत हैं भजन में आईए - डॉ. जयकुमार जलज उपग्रह प्रकाशन, रतलाम, संस्करण -2021
7. हिंदी-लघुकथा का इतिहास - डॉ.सत्यवीर मानव,समन्वय प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण-
8. लघुकथा के समीक्षा बिंदु - मधुदीप, दिशा प्रकाशन

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 242 - MN	Minor	लघुकथा लेखन प्रत्यक्ष कार्य	प्रात्यक्षिक	P	2

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (Aims) :

लघुकथा लेखन साहित्य की एक शैली है। सीमित शब्द का प्रयोग लघुकथा की विशेषता है। किसी भी अन्य साहित्यिक विधा की तरह लघुकथा विधा के विकासक्रम को जानना छात्रों के लिए आवश्यक है। लघुकथा एक ऐसी कहानी जिसे एक बार में पढा जा सकता है। छात्र में लघुकथा लेखन कौशल को विकसित करने में यह पाठ्यक्रम उपयोगी सिद्ध होगा। छोटी-छोटी लघुकथा लिखना छात्र अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है। लघुकथा व्यक्ति को अपनी कल्पना और रचनात्मकता को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। लघुकथा गागर में सागर इस उक्ति को चरितार्थ करती है। छात्रों को सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेरित करना है। उनमें लघुकथा लेखन का कौशल विकसित करना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcoms)

1. छात्र लघुकथा लेखन से परिचित होंगे।
2. छात्र लघुकथा विधा का इतिहास और पृष्ठभुमि से परिचित होंगे।
3. छात्र लघुकथा के तत्वों का परिचय प्राप्त करेंगे।
4. पठित लघुकथा से छात्र का पक्षी-प्राणियों के प्रति प्रेम बढेगा।
5. पठित लघुकथा से छात्र का पारिवारिक प्रेम बढेगा।
6. छात्र पर्यावरण संवर्धन का संदेश प्राप्त कर सकेंगे।
7. छात्र लघुकथा लेखन के प्रति प्रेरित होंगे।
8. छात्र लघुकथा में निहित मूल्यों से अवगत होंगे।
9. छात्र लघुकथा के महत्व एवं उद्देश्य को समझ सकेंगे।
10. छात्र लघुकथा की भाषा एवं शैली से परिचित होंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 2= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-Directed Learning	Information /Digital Literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	Life-long Learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	2	2	3	3	2	2	2	2	3	2	3	3	2	2	2	2	2	2	3	2
CO-2	2	3	3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2		2	2	2	2	2
CO-3	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2	3	2	2	2	2	2	2	2	2
CO-4	2		3	3	2	2	2	2	3	2	2	3	2	2	2	2	2	2	3	2
CO-5	2	2	3			2			2	2	3	3	2	2		2	2	2	3	2
CO-6	2	3	3	3			2		3	2	3	3		2	2	2		2	3	2
CO-7	2	3	3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2		2	2	2	2	2
CO-8	2	3	3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2
CO-9	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	2	2	2	2	2	2
CO-10	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2
Wgt Avg	2	2.3	3	2.3	2	2	2.1	2	2.3	2	2.7	3	2	2	2	2	2	2	2.4	2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	**लघुकथा लेखन** 1. पालतू प्राणियों पर यथा- गाय, बैल, भैंस, बकरी, कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा, ऊंट आदि पर लघुकथा लेखन छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित है। 2. पंछियों पर जैसे: गौरैया, तोता, मैना, कौवा, मोर आदि पर लघुकथा लेखन का छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित है।	30
इकाई II	**लघुकथा लेखन :** 1. पर्यावरणीय तत्वों पर जैसे : नदी ,पहाड़ ,पर्वत, पेड़ जंगल, खेत, सूर्य, चंद्र, आसमान आदि पर लघुकथा लेखन छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित है। 2. पारिवारिक रिश्तों पर जैसे: माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, दादा-दादी, (नाना-नानी, मामा-मामी आदि पर लघु कथा लेखन छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित है।	30

इन विषयों के अलावा अध्यापक छात्रों की इच्छा अनुसार और किसी भी विषय पर लघुकथा लिखने की अनुमति देंगे।

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30% (15 अंक)

1. 15 अंकों के लिए अध्ययन यात्रा/ पुस्तक परीक्षण/ क्षेत्र भेंट/ लघुकथा लेखक का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी/ मौखिक परीक्षा/ लिखित परीक्षा / परियोजना / क्षेत्रीय भेंट / ग्रंथालय कार्य / समूह चर्चा / प्रस्तुति / शोध परियोजना कार्य आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70% (35 अंक) प्रात्यक्षिक सत्रांत परीक्षा।

2. **प्रश्न** 1 **और** 2 - इकाई I और II पर 10 + 10 = 20 अंकों के लिए संबंधित विषय को लेकर लघुकथा लेखन कार्य प्रत्यक्ष करना होगा। लेखन के बाद वाचन और मूल्यांकन भी किया जाएगा।

   प्रश्न 3 - इकाई I और II पर सृजनात्मक विकास और लघुकथा लेखन कौशलाधारित छात्रों की मौखिकी लेनी होगी। मौखिकी के लिए 15 अंक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ -

1. समकालीन लघुकथा : सृजन और विचार - कमल चोपडा कौशिक पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. हिंदी लघुकथा का इतिहास - डॉ. सत्यवीर मानव समन्वय प्रकाशन, गाजियाबाद
3. हिंदी लघुकथा - डॉ. शकुंतला किरण, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
4. लघुकथा आकार और प्रकार - अशोक भाटिया, अनुज्ञा बुक्स- दिल्ली
5. लघुकथा : सृजनात्मक सरोकार - कमल चोपडा, दिशा प्रकाशन, दिल्ली

❀❀❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन
OE/GE course 2 credit theory

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 221 - OE	GE/OE	हिंदी गीत और एकांकी	सैद्धांतिक	T	2

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (Aims):

'हिंदी गीत और हिंदी एकांकी' इस विषय पर केंद्रित यह पाठ्यक्रम छात्रों को हिंदी साहित्य की प्रमुख विधा *गीत* और *एकांकी* से परिचित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। यह पाठ्यक्रम साहित्यिक सौंदर्यबोध, भावात्मक अभिव्यक्ति तथा सामाजिक चेतना को विकसित करने का माध्यम है। गीतों के माध्यम से जहाँ मनुष्य के अंतर्मन की संवेदनाएँ, प्रेम, देशभक्ति, संघर्ष और आशा-निराशा के भाव व्यक्त होते हैं। वहीं एकांकी के माध्यम से सामाजिक यथार्थ, मानवीय संबंधों, नैतिक मूल्यों और समस्याओं का प्रभावशाली चित्रण होता है। सुप्रसिद्ध गीतकार साहिर लुधियानवी और शैलेंद्र के गीतों के अध्ययन द्वारा छात्रों को गीत की संरचना, भावभूमि और सामाजिक संदर्भ को समझाना है। इसी प्रकार विष्णु प्रभाकर, डॉ. रामकुमार वर्मा और भुवनेश्वर प्रसाद जैसे एकांकी लेखकों के माध्यम से छात्र एकांकी की कथावस्तु, चरित्र-निर्माण, संवाद शैली और नाट्य सौंदर्य का अनुभव करेंगे। यह पाठ्यक्रम छात्रों में भाषाई अभिव्यक्ति, आलोचनात्मक चिंतन और रचनात्मक लेखन क्षमता को विकसित करता है। साथ ही सामाजिक सरोकारों, नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और सांस्कृतिक चेतना को प्रोत्साहित करता है। छात्रों के व्यक्तित्व विकास, साहित्यिक अभिरुचि तथा नाट्य कला के प्रति रुचि जगाने के लिए यह उपयोगी यह पाठ्यक्रम उपयुक्त है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

1. छात्र इस प्रात्यक्षिक कार्य पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात हिंदी गीतों की अवधारणा और उनके भावात्मक पक्ष को समझ सकेंगे।
2. साहिर लुधियानवी और शैलेंद्र के गीतों में निहित संदेशों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. प्रसिद्ध गीतों के माध्यम से राष्ट्रीय और सामाजिक मूल्यों को पहचान सकेंगे।
4. गीत लेखन की विशेषताओं को समझकर अपनी अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित कर सकेंगे।
5. एकांकी विधा, उसकी संरचना एवं उद्देश्य को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
6. विभिन्न एकांकी नाटकों का विश्लेषण कर उनमें निहित सामाजिक समस्याओं को अंकित कर सकेंगे।
7. एकांकी लेखकों की रचनात्मक दृष्टि और शैलीगत विशेषताओं को पहचान सकेंगे।
8. समकालीन सामाजिक परिस्थितियों पर अपने विचार साहित्यिक रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।

9. छात्रों के नाटकीय प्रस्तुति तथा संवाद कौशल में सुधार कर सकेंगे।

10. साहित्यिक संवेदना और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related Skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-directed learning	Information /Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3			1				1	1	2	1	1		2	2	3			1	
CO-2	3	2	2	2	2	2			1	2	1	1		2	2	3	2	3	1	
CO-3	3	2	2		2	2		1	1	2	1	1	3	2	2	3	2	3	1	
CO-4		2		2	2				1	2	1	1		2	2	3	3		1	2
CO-5	3									2	1	1		2	2	3			1	
CO-6	3	2	2	2	2	2		1		2	1	1	3	2	2	3	2	3	1	
CO-7	3	2	2		2	2				2	1	1	3	1	2	3	2	3	1	
CO-8		2			2			1		2	1	1		2	2	3	3		2	2
CO-9	3	3		2			3		3	3	1	1		1	3	3	3		1	2
CO-10	3		3		3	3				2	2	1		2	2	3		2	1	
Wgt Avg	3	2.1	2.2	2	2.1	2.2	3	1	3	2.1	1	1	3	2	2.1	3	2.4	2.8	1	2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	**गीत की अवधारणा और हिंदी गीतकार** 1. **गीत की अवधारणा** 2. साहिर लुधियानवी का जीवन एवं कृतित्व परिचय 3. साहिर लुधियानवी के गीत - 1. साथी हाथ बढ़ाना... 2. नीले गगन के तले... 3. यह देश है वीर जवानों का... 4. मैं पल दो पल का शायर हूं...	15

	4. शैलेंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय 5. शैलेंद्र के गीत : 1. किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार... 2. सब कुछ सीखा हमने ना सीखी होशियारी... 3. तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत में यकीन कर... 4. होठों पर सच्चाई रहती है... 5. नन्हे मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है...	
इकाई II	**हिंदी एकांकी** 1. एकांकी की अवधारणा : 1. सीमा रेखा- विष्णु प्रभाकर 2. चंपक -डॉ रामकुमार वर्मा 3. सबसे बड़ा आदमी -भुवनेश्वर प्रसाद	15

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/गीतकार/एकांकीकार का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी।

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रश्न 1 - इकाई i पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। (शब्द सीमा 300)
   2 x 7 = 14
2. प्रश्न 2 - इकाई ii पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। 2 x 7 = 14
3. प्रश्न 3 - दोनों इकाइयों पर सात बहु पर्यायी प्रश्न। 7 x 1 = 7

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी गीतों का इतिहास और विकास, हरिवंश नंदन, हिंदी साहित्य संस्थान, दिल्ली
2. गीतों का सौंदर्यशास्त्र, सुमित्रानंदन कुमार, पुस्तक बंधु, इलाहाबाद
3. हिंदी काव्य और गीत: एक ऐतिहासिक दृष्टि, शिवपूजन सहाय, साहित्यिक प्रकाशन, पटना
4. हिंदी साहित्य का काव्य तत्व, शंकर चतुर्वेदी, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मुंबई
5. हिंदी कविता और गीत साहित्य में लोक तत्व, रतनलाल शर्मा, लोक साहित्य संस्थान, जयपुर
6. आधुनिक हिंदी कविता और गीत, महादेवी वर्मा, पेंग्विन बुक्स, दिल्ली
7. हिंदी गीतों में भक्ति और रूमानी तत्व, राधाकृष्ण सिंह, साहित्य धारा, दिल्ली
8. हिंदी एकांकी: विकास और प्रवृत्तियाँ, शिवराम काव्य, आदर्श साहित्य संस्थान, कानपुर
9. हिंदी नाटक और एकांकी की समीक्षा, नवल किशोर, नाट्य संस्थान, वाराणसी
10. हिंदी नाटक और एकांकी, मुंशी प्रेमचंद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. एकांकी नाटक और उसका सामाजिक संदर्भ, सोमनाथ शर्मा, सृजन साहित्य प्रकाशन, जयपुर

12. हिंदी एकांकी: एक नाट्य विधा का विकास, शंकर कुमार, साहित्य विमर्श, लखनऊ
13. एकांकी नाटक: भारतीय नाट्य परंपरा में एक नूतन प्रयोग, शारदा दत्त, भारतीय नाट्य साहित्य, कोलकाता
14. हिंदी एकांकी नाटक: समकालीन विकास और प्रवृत्तियाँ, रवींद्रनाथ सिंह, नाट्य विमर्श, मुंबई
15. हिंदी एकांकी और समकालीन नाटककार, भूपेंद्र टंडन, साहित्य प्रवाह, दिल्ली

❀✿❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन

<table>
<tr><th>विषय कोड</th><th colspan="2">पाठ्यक्रम का शीर्षक</th><th colspan="2">Theory/Practical</th><th>कर्मांक</th></tr>
<tr><td>HIN - 200 - IKS</td><td>IKS</td><td>हिंदी भक्ति काव्य</td><td>सैद्धांतिक</td><td>T</td><td>2</td></tr>
</table>

लक्ष्य (Aims) :

भारत में गीति काव्य की प्राचीन परंपरा है। वेदों से पूर्व गीति काव्य की परंपरा है। साहित्य की शुरुआत ही गीति काव्य से हुई है। इसमें भावानुभूति, संगीतात्मकता, वैयक्तिकता आदि गुण होते हैं। भक्तिकालीन हिंदी और मराठी कवियों ने जनमानस में लोकप्रिय छंद, दोहों एवं पदों के माध्यम से अपनी भवभिक्ति की है। भक्ति काव्य एक ओर धार्मिक भावनाओं, भक्ति और श्रद्धा को उजागर करता है तो दूसरी ओर संगीतात्मकता और भावात्मकता के माध्यम से रस और भावनाओं को प्रकट करता है। नामदेव, कबीर, सूरदास, और मीराबाई गोस्वामी तुलसीदास, संत एकनाथ, संत तुकाराम आदि ने हिंदी और मराठी साहित्य को भक्ति काव्य के माध्यम से आध्यात्मिक और मानवीय दृष्टिकोण दिया है। उन्होंने समाज में धार्मिकता, नैतिकता और मानवीयता को उद्वेलित किया और समाज में एकता और समरसता को बढ़ावा दिया। इन महान कवियों ने न केवल हिंदी साहित्य को धार्मिक और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूक किया बल्कि उनकी रचनाओं ने समाज को एक साथ लाने और भेदभाव को दूर करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अत: उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है और अँधेरे में मार्ग आलोकित करता है। उनके द्वारा लिखित दोहे एवं पद जनमानस में प्रचलित एवं गाए जाते हैं। ये पद केवल गेय और जनसंवेद्य नहीं हैं बल्कि उनमें संगीत की रागरागिनियाँ भी विद्यमान हैं। इस दृष्टि से इन दोहों एवं पदों का महत्त्व और भी बढ़ता है। इसलिए भक्तिकालीन कवियों के प्रचलित गेय काव्य का अध्ययन आवश्यक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

1. भक्तिकालीन कवियों के प्रचलित गेय काव्य का अध्ययन करने के पश्चात् छात्र गीति काव्य के मनोरंजन और मनोवैज्ञानिक प्रभाव का परिचय प्राप्त करेंगे।
2. छात्रों में सामाजिक सुधार के प्रति जागरूकता निर्माण होगी।
3. भाषा तथा साहित्यिक शैली के प्रति रूचि निर्माण होगी।
4. आदर्श गुरु का स्थान एवं महत्त्व समझकर विशद करने में सक्षम बन सकेंगे।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व समझेंगे।

6. नैतिकता एवं सद्गुणों का प्रचार-प्रसार एवं विकास होगा।

7. सामाजिक न्याय और समानता की भावना का विकास होगा।

8. प्रेम और समर्पण भाव का महत्त्व जान पाएंगे।

9. नैतिक एवं चरित्रगत विकास होगा।

10. छात्रों में अध्यात्मिक भावना का विकास होगा।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical reasoning	Research-related Skills	Cooperation/ Team work	Scientific reasoning	Reflective thinking	Self-directed learning	Information / Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skill	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3	2	2									2			1	2				1
CO-2	3		2	2	2	2	2	2	2	2			2	2	2	2			2	1
CO-3	3	2													1	2				1
CO-4	3					2							2		2	2		1	2	1
CO-5	3	2		2		2	2		2	2	1	2	2		1	2			2	1
CO-6	3						2		2				2		2	2			2	1
CO-7	3		2	2	2		2	2	2	2			2		2	2	1		2	1
CO-8	3						2		2	2			2		2	2			2	1
CO-9	3		2				2				1		2		2	2		1	2	1
CO-10	3		2	2			2		2	2		2	2	2	2	2	1	1	2	1
Wgt Avg	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	2	2	2	1.7	2	1	1	2	1

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई - I	• **संत नामदेव :** 1. का करौं जाती का करों पांती। राजाराम सेऊं दिन राती॥ टेक॥ मन मेरी गज जिभ्या मेरी काती। रामरमे काटौं जम की फासी ॥१॥ अनंत नाम का सींऊं बागा। जा सीजत जम का डर भागा ॥२॥ सीबना सीऊं हौं सीऊं ईंब सीऊं। राम बिना हूं कैसे जीऊं ॥३॥	15

	सुरति की सूई प्रेमका धागा। नांमा का मन हरि सूं लागा ॥४॥ 2. साई मेरी रीझे सांचि। कूडे कपट न जाई राचि॥ टेक॥ भावै गावो भावै नाचौ। जब लगि नाहीं हिरदै सांची ॥१॥ अनेक सिगार करै बहु कामिनि। पीय के मनि नहीं भावै भामिनि ॥२॥ पतिव्रता पति ही की जाने। नामदेव कहै हरि ताकी मानै ॥३॥ 3. माधौ कैसे कीजै जोग। करत जोग बहुत कठिनाई तजि न सकौं या भोग ॥ टेक॥ नहीं मेरे रहणीं नहीं मेरे करणीं, बंध्यो पंच बसि पोष ॥१॥ नहीं मेरे ग्यान नहीं मेरे ध्यांना, ब्यापै हरि परसोक ॥२॥ में अनाथ सुकृत हीनों, तुम्हथै परयौ बियोग ॥३॥ भणत नामदेव हरि सरणि राषियों, नहीं तो हंसि हैं लोग ॥४॥ 4. जब देखा तब गावा। तउ जन धीरजु पावा ॥ नादि समाइलो रे सतिगुर भेटिले देवा ॥ जह झिलिमिली कारु दिसंता ॥ तह अनहद सबद बजंता ॥ जोति जोति समानी। मै गुरपरसादी जानी ॥ रतनकमल कोठरी। चमकार बिजुल तही ॥ नैरै नाही दूरि। निज आतमै रहिआ भरपूरि॥ जह अनहत, सूर उजारा। तह दीपक जलै छंछारा॥ गुर परसादी जानिआ। जतु नामा सहज समानिआ॥ 5. अस मन लाव राम रसना। तेरो बहुरी न होय जरा मरना॥१॥ जैसे मृगा नाद लव लावै। बान लगे वहि ध्यान लगावै॥२॥ जैसे कीट भृङ्ग मन दीन्ह। आपु सरीखे वा को कीन्ह॥३॥ नामदेव भनै दासन दास। अब न तजौं हरि चरन निवास॥४॥ • **कबीर :** 1. गुरु गोविन्द दोउ खड़े,काके लागू पाय, बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय। 2. सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार, लोचन अनंत उघाडिया अनंत दिखावन हार। 3. कबीर गुरु गरवा मिल्या,रलि गया आटे लूँण, जाति पांति कुल सब मिटें,नौंव घरौगे कौण। 4. सतगुरु बपुरा क्या करें,जे सिषही माँहे चूक, भावे त्यूं प्रमोधि ले,ज्यूँ वंसी बजाई फूँक। 5. बूढ़े थे परी ऊबरे, गुर की लहरि चमंकि,	

	भेरा देख्या जरजरा,ऊतरी पड़े फरंकि। 6. भली भई गुरु मिल्या, 7. जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध। अंधे अँधा ठेलियां, दोनों कूप पडंत॥ • **सूरदास :** 1. मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो। भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहिं पठायो । चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो ॥ मैं बालक बहिंयन को छोटो, छींको किहि बिधि पायो । ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो ॥ तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतिआयो । जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो ॥ यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो । 'सूरदास' तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो ॥ 2. मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो। मो सों कहत मोल को लीन्हों तू जसुमति कब जायो॥ कहा करौं इहि रिस के मारें खेलन हौं नहिं जात। पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तेरो तात॥ गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात। चुटकी दै दै ग्वाल नचावत हंसत सबै मुसुकात॥ तू मोहीं को मारन सीखी दाउहिं कबहुं न खीझै। मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि रीझै॥ सुनहु कान बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत। सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥ 3. मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी? किती बार मोहि दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी॥ तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वैहै लाँबी-मोटी। काढ़त-गुहत-न्हवावत जैहै नागिनि-सी भुइँ लोटी॥ काँचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन-रोटी। सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी॥ 4. किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत ।। मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिम्ब पकरिबै धावत ॥ कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सौं पकरन चाहत । किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत ॥ कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति । करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति ।। बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति । अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु को दूध पियावति ॥	

इकाई - II	• **मीराबाई** 1. पायो जी मैने राम रतन धन पायो वस्तु अमौलिक दी मेरे सतगुरु, किरपा करि अपनायो पायो जी मैने... जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो पायो जी मैने... खर्च ना खूटे वाको चोर ना लूटे, दिन दिन बढ़त सवायो पायो जी मैने... सत की नांव, खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो पायो जी मैने... मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो पायो जी मैने राम रतन धन पायो 2. मैं गिरधर के घर जाऊँ। गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम देखत रूप लुभाऊँ॥ रैण पड़ै तब ही उठ जाऊँ भोर भये उठ आऊँ। रैण दिना वा के संग खेलूँ ज्यूँ त्यूँ ताही रिझाऊँ॥ जो पहिरावै सोई पहिरूँ जो दे सोई खाऊँ। मेरी उण की प्रीत पुराणी उण बिन पल न रहाऊँ॥ जहाँ बैठावें तितही बैठूँ बेचै तो बिक जाऊँ। मीरा के प्रभु गिरधर नागर बार-बार बलि जाऊँ॥ 3. हे री मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दर्द न जाणै कोय। घायल की गति घायल जाणै, जो कोई घायल होय। जौहरी की गति जौहर जाणै, जो कोई जौहर होय। सूली ऊपर सेज पिया की, मिलना किस विध होए। गगन मण्डल पर सेज पिया की, किस विध मिलणा होय। दर्द की मारी बन-बन डोलूँ, वैध मिला नहिं कोय। मीरा की प्रभु पीर मिटेगी, जद वैध साँवरिया होय। 4. मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई कोई कहे कारो, कोई कहे गोरो कोई कहे कारो, कोई कहे गोरो	15

लियोन हे अक्खियां को
कोई कहे हलकों, कोई कहे भरो
कोई कहे हलकों, कोई कहे भरो
लियोन हे तराजू टोल
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई
कोई कहे छानी, कोई कहे छावनी
कोई कहे छानी, कोई कहे छावनी
लियोन हे पचंता टोल
तन का गहना मैं सब कुछ दिन
तन का गहना, सब कुछ दिन
दियो है बाजूबंद खोल
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई
जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

- **गोस्वामी तुलसीदास**

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन
हरण भवभय दारुणं ।
नव कंज लोचन कंज मुख
कर कंज पद कंजारुणं ॥१॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि
नव नील नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहुँ तडित रुचि शुचि
नोमि जनक सुतावरं ॥२॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव
दैत्य वंश निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल
चन्द दशरथ नन्दनं ॥३॥

शिर मुकुट कुंडल तिलक
चारु उदारु अङ्ग विभूषणं ।
आजानु भुज शर चाप धर
संग्राम जित खरदूषणं ॥४॥

इति वदति तुलसीदास शंकर
शेष मुनि मन रंजनं ।
मम् ह्रदय कंज निवास कुरु
कामादि खलदल गंजनं ॥५॥

मन जाहि राच्यो मिलहि सो
वर सहज सुन्दर सांवरो ।

	करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ॥६॥ एहि भांति गौरी असीस सुन सिय सहित हिय हरषित अली। तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥ *॥सोरठा॥* जानी गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि । मंजुल मंगल मूल वाम अङ्ग फरकन लगे। • **संत एकनाथ :** 1. भला संतनका संग। खावे निजबोधन की भंग। सदर आनंदमो दंग। ऐसा मंगल फकीर॥1॥ ग्यानके मैदान खडे। समदरसे आन लढे। बहोतो के तखत चढे। ऐसा मंगल फकीर॥2॥ किया संतनका दुमाल। मेरा तुटा बहु जंजाल। ऐसा एकनाथ कंगाल। ऐसा मंगल फकीर॥3॥ 2. दिलमें याद करो रे। जनम का सार्थक करो रे॥1॥ सारे दिन करत पेट्खातर धंदा। विठ्ठल नाम लेवत नहीं केंवरे तुं गधा॥2॥ जमका सेटा बाजे पीठपर कोई आवे नहीं सात। एका जनार्दन नाम पुकारे करो हरिनाम बात॥3॥ 3. दिलकी गांठ खोली। यारो नाम बोलो ॥1॥ कुनई आवे सात। मुंडे कायकु करे बात॥2॥ जोरू लरके माबाप। सब पसारे हात॥3॥ हत्ती घोडे पालख मेना। नहीं आवे सात॥4॥ दो दिन का बाजार यारो। कायकु करता बात॥5॥ झूटी माया झूटी माया। झूटा सब दिन रात॥6॥ एका जनार्दन बोले भाई। कोही नहीं आवे सात॥7॥ 4. लखो बुलबुल है। दावोजी मुबा रखो॥ध्रु॥ झूटा तेरा जप भात-रोटी गप। सद्गुरुमें छप। तुझ काल करेगा गप॥1॥ लगो मुख लिया नाम। आंदर भरा है काम। ऐसा केंव हुवा बेफाम। तुझ कहां मिलेगा राम॥2॥ मोकू आंगकुं लगया राख। दिलमो नापाक।		

	ऐसा देखे लख। एका जनार्दनीं देख॥3॥ 5. हम तो जोगी रे बाबा संजोगी ॥ध्रु॥ बहुत दिन के पुराणें। बिरला बुझे कोई लाखों में। गुरु साहेब जाणे॥1॥ जपका जोगी तपका जोगी ना जोगी जुगजुग जावे। हातमो प्याला लिया। प्रेमका जोगी भरभर पीवे॥2॥ जोगी कू धुंडत जोगया कीने लछे नहीं पाया। एका जनार्दन कृपासो जोगी पकरही लाया॥3॥ • **संत तुकाराम :** 8. लोभी के चित्त धन बैठे। कामिनी के चित्त काम। माता के चित्त पूत बैठे। तुका के मन राम॥ 9. तुका दास तिनका रे। रामभजन निरास। क्या बिचारे पंडित करो रे। हात पसारे आस॥ 3. तुका सुरा नहिं सबदका रे। जब कमाई न होय। चोट साहे घनकी रे। हीरा नीबरे तोय॥ 4. चित्त मिले तो सब मिले। नहिं तो फुकट संग। पानी पाथर एक ठोर। कोरा न भिजे अंग॥ 5. तुका संगत तिनसे कहिये। जिनसे सुख दुनाय। दुर्जन तेरा मुख काला। थीता प्रेम घटाये॥	

अंक विभाजन

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/भक्तिकालीन पदों का संकलन/पदों का कंठस्थीकरण/छात्र गोष्ठी/समुह चर्चा आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रश्न 1 इकाई I पर चार प्रश्न,जिनमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। (शब्द सीमा 300) $2 \times 7 = 14$
2. प्रश्न 2 इकाई II पर चार प्रश्न, जिनमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। $2 \times 7 = 14$
3. प्रश्न 3 दोनों इकाइयों पर सात बहुपर्यायी प्रश्न $7 \times 1 = 7$

संदर्भ ग्रंथ :

1. कबीर ग्रंथावली - श्यामसुंदरदास, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, नई दिल्ली।
2. सूरदास - आचार्य रामचंद्र शुल्क, चिंतन प्रकाशन, कानपूर।
3. निर्गुण कवियों के सामाजिक आदर्श - डॉ. विमल महता, आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली।

4. कबीर - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. मीरां - व्यक्तित्व और कृतित्व श्रीशरण, आधुनिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. सूरदास - संपा. हरवंशलाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सूरदास और उनका भ्रमरगीत - डॉ. श्रीनिवास शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली।
8. विनय पत्रिका - गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर।
9. श्री नामदेव गाथा, प्रकाशक - महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई, पुनर्मुद्रित संस्करण - जून २००८।
10. सार्थ-एकनाथी भारूडे, किसनमहाराज साखरे, प्रकाशक - यशोधन प्रकाशन, साधकाश्रम-आळंदी देवाची, पुणे - 412105।
11. श्री संत तुकाराम महाराज गाथा, संपादक श्री. वै.ह.भ.प बाबुराव महाराज देवडीकर, प्रकाशक : राहुल धार्मिक वाङ्मय सेवा प्रकाशन, 3 री आवृत्ती - 2019।

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / तृतीय अयन
AEC 1 Credit Theory

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 231 - AEC	AEC	हिंदी भाषा क्षमता संवर्धन भाग-I	सैद्धांतिक	T	2
प्रस्तुत पाठ्यक्रम कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा संगणक विज्ञान आदि द्वितीय वर्ष की सभी कक्षाओं के लिए है :- S.Y.B.A./ S.Y.B.Sc (Regular)/ S.Y.B.Com/ S.Y.B.Sc.(Computer Science - BCS)/ S.Y.B.Sc (Computer Application - BCA)/ S.Y.B.B.A.(CA)/ S.Y.B.Com-BM/ S.Y.B.Com-CA/ S.Y.B.Com-IB/ S.Y.B.Sc (Data Science)					

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (Aims) :

भाषिक क्षमता विकास इस विषय पर केंद्रित यह पाठ्यक्रम छात्रों की भाषाई क्षमता को विकसित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। भाषिक क्षमता विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा भाषा के सुनना, बोलना, पढना और लिखना आदि अंगों को समझा जाता है। भाषा मनुष्य के भाव, विचारो को अन्य व्यक्ति के सम्मुख व्यक्त करने का महत्वपूर्ण साधन है। सफल और प्रभावशाली संप्रेषण के लिए भाषाई क्षमता की आवश्यकताएँ है। वास्तव में भाषा क्षमता संवर्धन भाषा का व्यावहारिक पक्ष है, जो हमें प्रभावी ढंग से संवाद करने, ज्ञान प्राप्त करने, विभिन्न संस्कृतियों को समझने में मदत करता है। व्यक्तित्व के विकास में भाषा कौशल महत्वपूर्ण है। भाषा पर अधिकार आने से रोजगार की संभावनाए भी अधिक होती । इस दृष्टि से स्नातक स्तर पर छात्रों के लिए यह विषय आवश्यक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcoms)

1. छात्रों में हिंदी भाषा की क्षमता का संवर्धन होगा तथा भाषिक कौशल से परिचित होंगे।
2. छात्र भाषिक विकास से परिचित होंगे।
3. छात्र भाषा क्षमता संवर्धन के आधार को समझ सकेंगे।
4. छात्र हिंदी वर्णमाला से परिचित होंगे।
5. भाषिक कौशल अध्ययन से छात्र शिक्षा और ज्ञान को प्राप्त कर सकेंगे।
6. छात्र भाषिक क्षमता संवर्धन के माध्यम से संप्रेषण करने में सफल होंगे।
7. भाषिक कौशल विकसित होने से रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।
8. छात्र भाषिक कौशल के विविध संदर्भ से परिचित होंगे।
9. छात्र अपने भाव एवं विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।
10. क्षमता संवर्धन के पठित कहानी और कविता के अध्ययन से नैतिक मूल्य विकसित होंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 2= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-Directed Learning	Information /Digital Literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	Life-long Learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	**PO-2**	**PO-3**	**PO-4**	**PO-5**	**PO-6**	**PO-7**	**PO-8**	**PO-9**	**PO-10**	**PO-11**	**PO-12**	**PO-13**	**PO-14**	**PO-15**	**PSO-1**	**PSO-2**	**PSO-3**	**PSO-4**	**PSO-5**
CO-1	2	2	3	3	2	2	2	2	3	2	3	3	2	2	2	3	2	2	3	2
CO-2	2		3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2		3	2	2	2	2
CO-3	3	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2	3	2	2	2	3	2	2	2	3
CO-4	3		3	3	2	2	2	2	3	2	2	3	2	2	2	3	2	2	3	3
CO-5	3	2	3			2			2	2	3	3	2	2		3	2	2	3	2
CO-6	2			3			2		3	2	3	3		2	2	3		2	3	3
CO-7	2		3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2		3	2	2		2
CO-8	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2
CO-9	3		2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	2	3	2	2		2
CO-10	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2
Wgt Avg	2.6	2.4	2.7	2.3	2	2	2.1	2	2.3	2	2.7	3	2	2	2	3	2	2	2.5	2.3

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	**वर्ण विचार:** 1. हिंदी वर्णमाला: वर्णों का उच्चारण और वर्गीकरण 2. स्वरों के भेद 3. व्यंजनों के भेद 4. संधि :स्वर संधि, व्यंजन संधि विसर्ग संधि 5. संज्ञा के भेद :पदार्थ वाचक संज्ञा, भाव वाचक संज्ञा। 6. **सर्वनाम के भेद :** ▪ पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं, तू, आप), ▪ निजवाचक सर्वनाम (आप)	15

	▪ निश्चयवाचक सर्वनाम (यह, वह, सो) ▪ संबंध वाचक सर्वनाम (जो) ▪ प्रश्नवाचक सर्वनाम (कौन, क्या) ▪ अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ)	
इकाई II	**साहित्य परिचय(कविता/ कहानी)** **कविता:** 1. मुकरियाँ (3) - भारतेंदु हरिश्चंद्र 2. चरण चले, ईमान अचल हो - माखनलाल चतुर्वेदी 3. किसान - मैथिलीशरण गुप्त 4. बहुत दिनों के बाद - नागार्जुन 5. भाईचारा - भवानीप्रसाद मिश्र 6. हिमालय के प्रति - रामधारी सिंह दिनकर **कहानी :** 2. फूलो का कुरता - यशपाल 3. आमों का टोकरा - सआदत हसन मंटो 4. तलाश - सूर्यबाला	15

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/छात्र गोष्ठी/लेखक, कवि साक्षात्कार/समुह चर्चा आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रश्न 1 - इकाई i पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। (शब्द सीमा 300) $2 \times 7 = 14$
2. प्रश्न 2 - इकाई ii पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। $2 \times 7 = 14$
3. प्रश्न 3 - दोनों इकाइयों पर सात बहु पर्यायी प्रश्न। $7 \times 1 = 7$

संदर्भ ग्रंथ

1. विशुद्ध हिंदी - डॉ. सदानंद भोसले, विकास प्रकाशन, कानपूर
2. भाषा शिक्षण - डॉ. रविंद्रनाथ श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी शिक्षण - डॉ. मंजू शर्मा, डॉ. बनवारीलाल जैन, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
4. हिंदी शिक्षण - उषा सिंहल, सौरभ प्रकाशन, दिल्ली
5. भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान - बृजेश्वर वर्मा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली

❀✿❀

चतुर्थ अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/ Practical	कर्मांक	पृष्ठ क्रमांक
HIN - 251 - MJ	Major Core	भारतीय काव्यशास्त्र	सैद्धांतिक	4	
HIN - 252 - MJ		भारतीय काव्यशास्त्र प्रत्यक्ष कार्य	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 271 - VSC	VSC	अनुवाद व्यवहार	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 281 - CEP	CEP	सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 291 - MN	Minor	भारतीय बाल कहानियाँ	सैद्धांतिक	2	
HIN - 292 - MN		बाल कहानियाँ लेखन	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 271 - OE	GE/OE	हिंदी गीत और एकांकी लेखन	प्रात्यक्षिक	2	
HIN - 251 - SEC	SEC	व्यावहारिक हिंदी	प्रात्यक्षिक	2	
HIN – 281 - AEC	AEC	हिंदी भाषा क्षमता संवर्धन भाग - II	सैद्धांतिक	2	

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन

Major Core Corse: 4 Credit Theory

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 251 - MJ	Major Core	भारतीय काव्यशास्त्र	सैद्धांतिक	T	4

पाठयक्रम का लक्ष्य (Aims):

'भारतीय काव्यशास्त्र' विषय पर केंद्रित यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को काव्य की मूलभूत अवधारणाओं, सिद्धांतों तथा उनके साहित्यिक महत्व को समझने, विश्लेषण करने और काव्य रचनाओं में उनकी पहचान करने की क्षमता प्रदान करने हेतु तैयार किया गया है। यह पाठ्यक्रम छात्रों को काव्य की परिभाषा, लक्षण, प्रयोजन तथा उसके प्रमुख तत्वों से परिचित कराते हुए उनमें साहित्यिक सौंदर्यबोध को विकसित करेगा। काव्य के हेतु तथा प्रयोजन के विवेचन के माध्यम से वे रचना की गूढ़ता को समझ पाएँगे। रस सिद्धांत के अंतर्गत छात्र रस की अवधारणा, भरतमुनि का रस सूत्र, रस के अंग, रस निष्पत्ति की प्रक्रिया तथा साधारणीकरण सिद्धांत को समझेंगे जिससे वे काव्य की भावानुभूति एवं सौंदर्य की गहराई तक पहुँच सकेंगे। अलंकार शास्त्र के अंतर्गत शब्दालंकार, अर्थालंकार एवं उभयालंकार की परिभाषा, स्वरूप और सौंदर्यात्मक उपयोगिता का विश्लेषण का अध्ययन करेंगे। साथ ही छात्र अलंकार और अलंकार्य के भेद को समझकर काव्य में अलंकारों के प्रयोग का विवेचन करना सीखेंगे। शब्दशक्ति के अंतर्गत अभिधा, लक्षणा और व्यंजना की गरिमा समझानी है। औचित्य सिद्धांत के अंतर्गत वे औचित्य की अवधारणा, उसके विविध भेदों तथा काव्य में औचित्य की अनिवार्यता और उपयुक्तता को उदाहरण के द्वारा समझानी है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

1. यह पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात छात्र काव्य की परिभाषा तथा लक्षणों के द्वारा साहित्य की अवधारणा को समझेंगे।
2. छात्र काव्य के प्रयोजन तथा साहित्यिक रचनाओं के उद्देश्य का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. छात्र काव्य के प्रमुख तत्वों का समीक्षात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
4. छात्र रस की अवधारणा, रस सूत्र तथा रस निष्पत्ति की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
5. छात्र काव्य में रस के अंग तथा साधारणीकरण सिद्धांत की जानकारी प्राप्त करेंगे।
6. छात्र अलंकार की परिभाषा, स्वरूप एवं काव्य में उसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट कर सकेंगे।

7. छात्र अलंकार एवं अलंकार्य के अंतर को समझते हुए काव्य के सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष को समझने में सक्षम होंगे।
8. छात्र काव्य में अलंकारों की उपादेयता तथा उनका सौंदर्यात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
9. छात्र शब्दशक्ति एवं औचित्य की अवधारणा एवं उसके विविध भेदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
10. छात्र साहित्यिक रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related Skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-directed learning	Information /Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	**PO-2**	**PO-3**	**PO-4**	**PO-5**	**PO-6**	**PO-7**	**PO-8**	**PO-9**	**PO-10**	**PO-11**	**PO-12**	**PO-13**	**PO-14**	**PO-15**	**PSO-1**	**PSO-2**	**PSO-3**	**PSO-4**	**PSO-5**
CO-1	3		1			1				2		1	1		2	3				
CO-2	3	2	1		2				2	2					2	3		2		
CO-3	3	2	1		2				2	2	1		1	1	2	3		2		
CO-4	3		1							2					2					
CO-5	3	2	1	1	2	1			2	2					2	3		2		
CO-6	3	2	1		2				2	2					2	3		2	2	
CO-7	3	2	1		2		1	1	2	2					2	3	2			
CO-8	3	2	1	1	2	1		1	2	2		1		1	2	3	2	2		2
CO-9	3						1			2			1		2	3		2		
CO-10	3	2			2	1			2	2	1	1		1	2	3	2	2		
Wgt Avg	3	2	1	1	2	1	1	1	2	2	1	1	1	1	2	3	2	2	2	2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	**काव्य** 1. काव्य परिभाषा और काव्य लक्षण 2. काव्य हेतु 3. काव्य प्रयोजन 4. काव्य के तत्व (भाव, बुद्धि, कल्पना और शैली)	15

इकाई II	**रस** 1. रस की अवधारणा 2. रस सूत्र 3. रस के अंग 4. रस निष्पत्ति 5. साधारणीकरण का सिद्धांत	15
इकाई III	**अलंकार सिद्धांत:** 1. अर्थ, स्वरूप, परिभाषा 2. अलंकार और अलंकार्य 3. काव्य में अलंकार का महत्व	15
इकाई IV	**शब्दशक्ति तथा औचित्य सिद्धान्त** 1. शब्दशक्ति - अभिधा, लक्षणा, व्यंजना का सामान्य परिचय 2. औचित्य की अवधारणा 3. औचित्य के भेद 4. काव्य में औचित्य का महत्व	15

अंक विभाजन:

आंतरिक मूल्यांकन : 30 %

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/अध्ययन यात्रा/पुस्तक परीक्षण/क्षेत्रीय भेंट/ लेखक आदि का साक्षात्कार, समूह चर्चा, छात्र संगोष्ठी।

सत्रांत परीक्षा : 70 %

चार इकाइयों पर अथवा में एक-एक प्रश्न। कुल चार प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य। $4 \times 15 = \mathbf{60}$

प्रश्न 5 : वस्तुनिष्ठ बहु पर्यायी $10 \times 1 = \mathbf{10}$

पहली और दूसरी इकाई पर दो-दो और तीसरी और चौथी इकाई पर तीन-तीन बहु पर्यायी प्रश्न।

संदर्भ ग्रंथ:

1. काव्यशास्त्र, भगीरथ मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

2. काव्यशास्त्र की भूमिका, डॉ, नगेन्द्र, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली

3. भारतीय साहित्यशास्त्र, बलदेव उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

4. साहित्यशास्त्र के मुख्य सिद्धांत, डॉ, राममूर्ति त्रिपाठी, पुस्तक भवन, इलाहाबाद

5. हिंदी काव्यशास्त्र, आचार्य शांतिलाल जैन, गांधी

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन

Major Core Corse credit Theory and 2 credit Practical

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 252 - MJ	Major Core	भारतीय काव्यशास्त्र प्रत्यक्ष कार्य	प्रात्यक्षिक	P	2

पाठयक्रम का लक्ष्य (Aims):

प्रात्यक्षिक कार्य इस पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिसके माध्यम से छात्र काव्यशास्त्र के सिद्धांतों को न केवल सैद्धांतिक रूप में जानेंगे बल्कि उनका व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त करेंगे। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को काव्यशास्त्र के मौलिक सिद्धांतों से अवगत कराते हुए उनमें रस, अलंकार और औचित्य के सैद्धांतिक और प्रायोगिक ज्ञान का विकास करना है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्र शब्दालंकार, अर्थालंकार और मिश्रालंकार के प्रकारों का गहन अध्ययन करेंगे। यमक, अनुप्रास, वक्रोक्ति, श्लेष जैसे शब्दालंकारों और उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, दृष्टांत, संदेह, विरोधाभास, मानवीकरण जैसे अर्थालंकारों का सम्यक् विवेचन करेंगे ताकि वे इन अलंकारों के सौंदर्यात्मक और रचनात्मक प्रयोग को समझ सकें। छत्रों से कवियों की रचनाओं का प्रत्यक्ष अध्ययन करवाया जाएगा जिससे वे अलंकारों की सूक्ष्मता का अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य, रौद्र, भयानक, अद्‌भुत, शांत, वात्सल्य और भक्ति जैसे रसों का अध्ययन करते हुए भावनात्मक और काव्यात्मक गहराई की समझ विकसित करनी है। समग्रतः यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिरुचि को न केवल परिष्कृत करेगा बल्कि उनके चिंतन, विश्लेषण और सृजनात्मक क्षमताओं को भी प्रगल्भ बनाएगा। इसके साथ ही छात्र काव्यशास्त्र के सिद्धांतों के व्यावहारिक प्रयोग में दक्ष होंगे और साहित्यिक रचनाओं की सम्यक् व्याख्या और मूल्यांकन करने में सक्षम बनाना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

1. यह पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात छात्र शब्दालंकारों की पहचान कर उनके प्रयोग का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. छात्र अर्थालंकारों के स्वरूप को समझकर उनका विवेचन कर सकेंगे।
3. छात्र मिश्रालंकारों के प्रकारों को स्पष्ट कर काव्य उदाहरणों के माध्यम से उनका विश्लेषण कर सकेंगे।
4. विभिन्न कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर उनमें निहित अलंकारों का संकलन एवं विश्लेषण कर सकेंगे।
5. छात्र काव्य में अलंकारों की उपादेयता एवं सौंदर्यात्मक महत्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।
6. छात्र रस के प्रकारों की अवधारणा को समझ सकेंगे।

7. छात्र विभिन्न रसों की विशेषताओं को उदाहरणों के माध्यम से व्याख्यायित कर सकेंगे।
8. छात्र काव्य पाठ से रसों के उदाहरण संकलित कर उनका विश्लेषण प्रस्तुत कर सकेंगे।
9. छात्र रसों के आधार पर काव्य की भावात्मक अभिव्यक्ति एवं प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।
10. रस एवं अलंकार के समन्वय से उत्पन्न काव्य-सौंदर्य को अंकित कर सकेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related Skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-directed learning	Information /Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3	2	3		2	2				2						3	2	2		
CO-2	3		3		2	2				2						3	2	2		
CO-3	3	2	3		2	2				2						3	2	2		
CO-4	3		3		2	2				2						3	2	2		
CO-5	3	2				2				2						3	2	2		
CO-6	3									2					2	3		2		
CO-7	3		3		2	2				2						3	2	2		
CO-8	3	2	3		2	2				2						3	2	2		
CO-9	3		2		2	2			2	2					2	3	2	2		
CO-10	3		2		2	2									2	3	2	2		
Wgt Avg	3	2		2.7	2	2			2	2					2	3	2	2		

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	**अलंकार के प्रकार** 1. **शब्दालंकार:** यमक, अनुप्रास, वक्रोक्ति, श्लेष । 2. **अर्थालंकार:** उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, दृष्टांत, संदेह, विरोधाभास, मानवीकरण । 3. **मिश्रालंकर:** संसृष्टि, संकर । 4. छात्रों से अलंकार भेद के अध्ययन हेतु कवियों की रचनाओं का प्रत्यक्ष अध्ययन करवाकर विविध अलंकारों के उदाहरणों का भेदानुरूप का संकलन कर विश्लेषण करवाना अपेक्षित है ।	30

इकाई II	**रस के भेद** 1. श्रृंगार रस, हास्य रस, करुण रस, वीर रस, रौद्र रस ,भयानक रस, अद्‌भुत रस, शांत रस, वात्सल्य रस, भक्ति रस। 2. छात्रों से रस के भेदों के अध्ययन हेतु कवियों की रचनाओं का प्रत्यक्ष अध्ययन करवाकर विविध रसों के उदाहरणों का भेदानुरूप संकलन कर विश्लेषण करवाना अपेक्षित है।	30

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30% (15 अंक)

1. 15 अंकों के लिए अध्ययन यात्रा/ अलंकारों के उदहारण संकलन/छात्र गोष्ठी/ मौखिक परीक्षा/ लिखित परीक्षा / परियोजना / क्षेत्रीय भेंट / ग्रंथालय कार्य / समूह चर्चा / प्रस्तुति / शोध परियोजना आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70% (35 अंक) प्रात्यक्षिक सत्रांत परीक्षा।

1. **प्रश्न 1 और 2** - इकाई I और II पर 10 + 10 = 20 अंको के लिए अलंकार और रस संबंधी उदहारण लिखकर प्रत्यक्ष कार्य छात्रों से करवाना होगा। जैसे - अलंकार और रस के उदाहरणों का लेखन, वाचन एवं मूल्यांकन आदि।

   प्रश्न 3 - इकाई I और II पर सृजनात्मक विकास और रस तथा अलंकार आधारित छात्रों की मौखिकी लेनी होगी। मौखिकी के लिए 15 अंक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ:

1. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, अनुवादक: मनोमोहन घोष, एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता
2. रसगंगाधर, पं. जगन्नाथ, संपादक: द्वारका प्रसाद शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी
3. काव्यप्रकाश, मम्मट, अनुवादक: एस. के. डे, साहित्य अकादमी, दिल्ली
4. साहित्यदर्पण, विश्वनाथ, अनुवादक: पी. वी. केन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
5. रश्मिरथी, रामधारी सिंह 'दिनकर', लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
6. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
7. सूरसागर, सूरदास, संपादक: परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दुस्तानी अकादमी, लखनऊ
8. रामचरितमानस, तुलसीदास, संपादक: रामकुमार दास, गीता प्रेस, गोरखपुर

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन

VSC (Vocationa l Skill Course) 02 Credit (Partic le)

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 271 - VSC	VSC	अनुवाद व्यवहार	प्रात्यक्षिक	P	2

लक्ष्य (Aims) :

अनुवाद जिस तरह भाषा का अंतरण होता है उसी तरह अनुवाद सांस्कृतिक, सामाजिक सेतु के रूप में भी कार्य करता है। अनुवाद के स्वरूप एवं प्रविधि को समझने के पश्चात अनुवाद व्यवहार महत्वपूर्ण चरण है। इसमें साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद कार्य प्रत्यक्ष करने से अनुवाद में कुशलता संभव है। अनुवाद का महत्व हर क्षेत्र में होने के कारण रोजगार के भी अनेक अवसर खुल गए हैं। बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी में अनुवाद की आजकल नितांत आवश्यकता है। साथ ही केंद्र सरकार के विविध कार्यालयों में अनुवादक के पद होते हैं। अतः साहित्य और साहित्येतर क्षेत्र में अनुवाद का विशेष महत्व है। अनुवाद सिद्धांत को समझने के उपरांत प्रत्यक्ष अनुवाद करके सांस्कृतिक सेतु बनकर वित्तीय आय भी संभव है। इसलिए प्रथम वर्ष कला स्नातक के छात्रों के पाठ्यक्रम में अनुवाद व्यवहार विषय आवश्यक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे:

1. अनुवाद की अवधारणा समझेंगे।
2. छात्र प्रत्यक्ष अनुवाद करने के लिए प्रेरित होंगे।
3. अनुवाद करने के लिए आवश्यक दृष्टि विकसित होगी।
4. साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद चुनौतियों को समझेंगे।
5. अनुवाद की समस्याओं को समझेंगे।
6. अनुवाद करते समय सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों को समझते हुए उनका प्रयोग करेंगे।
7. स्वयं सफल अनुवादक बन सकेंगे।
8. रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे।
9. सांस्कृतिक वैविध्य जानने के लिये अनुवाद का महत्व समझ में आएगा।
10. अनुवाद कार्य से निरंतर अध्ययन करने की प्रेरणा मिलेगी।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical reasoning	Research-related Skills	Cooperation/ Team work	Scientific reasoning	Reflective thinking	Self-directed learning	Information / Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skill	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3									2					1	2				1
CO-2	3									2					1	2				1
CO-3	3		3			2		2		2				1	1	2		2	2	1
CO-4	3			3			1			2	1				1	2				1
CO-5	3			3						2					1	2				1
CO-6	3	3		3	3	2			2	2	1	2	2	1	1	2		2	2	1
CO-7	3				3					2					1	2	2			1
CO-8	3									2					1	2	2			1
CO-9	3								2	2		2		1	1	2				1
CO-10	3						1			2				1	1	2				1
Wgt Avg	3	3	3	3	3	2	1	2	2	2	1	2	2	1	1	2	2	2	2	1

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई - I	प्रात्यक्षिक-साहित्यिक अनुवाद काव्य, कहानी, उपन्यास तथा नाटक का प्रत्यक्ष अनुवाद कार्य (25 पृष्ठों तक)	30
इकाई - II	प्रात्यक्षिक - साहित्येतर अनुवाद विज्ञापन, समाचार पत्र, संविधान, अधिनियम, अध्यादेश,बैंक, रेल, रक्षा, कृषि, खेल और विधि अनुवाद कार्य (25 पृष्ठों तक)	30

प्रात्यक्षिक परीक्षा के लिए बाह्य परीक्षक के द्वारा मूल्यांकन अनिवार्य है । बाह्य परीक्षक संबंधित महाविद्यालय से मान्य नहीं है। वह दूसरे महाविद्यालय में कार्यरत होंगे।

अंक विभाजन

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों के लिए इकाई I अथवा II में से प्रत्यक्ष अनुवाद कार्य पर प्रश्न ।

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रत्यक्ष अनुवाद के लिए मराठी कविता/कहानी का अंश दिया जाएगा। हिंदी अनुवाद के लिए इकाई I पर चार प्रश्न, जिनमें से दो प्रश्नों का हिंदी अनुवाद कर उत्तर लिखने हैं। $2 \times 10 = 20$
2. इकाई II पर दो प्रश्न, जिनमें से एक प्रश्न का हिंदी अनुवाद कर उत्तर लिखने हैं। $1 \times 10 = 10$
3. इसी इकाई पर बैंक और रेल क्षेत्र से संबधित मराठी /अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के लिए दो प्रश्न, अथवा में दिए जाएंगे। एक का हिंदी अनुवाद कर उत्तर लिखना होगा। $1 \times 5 = 5$

संदर्भ ग्रंथ :

1. अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग - प्रो. जे. गोपीनाथन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
4. अनुवाद और रचना का उत्तर-जीवन - डॉ. रमण सिन्हा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

❀✿❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 281 - CEP	CEP	सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम	प्रात्यक्षिक	P	2

लक्ष्य (Aims) :

कम्युनिटी इंगेजमेंट प्रोग्राम एक ऐसा नवाचारी शैक्षणिक प्रयास है, जो छात्रों को अपने स्थानीय समाज, संस्कृति, इतिहास और विरासत से जोड़ने का सशक्त माध्यम बनता है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र न केवल अपनी जड़ों से जुड़ेंगे, बल्कि लोक जीवन की विविधता, रीति-रिवाज़ों और परंपराओं की गहराई से समझ भी विकसित करते हैं। जैसे - लोक उत्सव वृत्तांत, लोक विश्वास वृत्तांत और प्रदेश विशेष की लोक संस्कृति के संदर्भ में सर्वेक्षण जैसे कार्य छात्रों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूक बनाते हैं। ये अनुभव उन्हें पुस्तकीय ज्ञान से आगे ले जाकर जीवन मूल्यों, सामाजिक संरचनाओं और सामूहिक चेतना की वास्तविक समझ प्रदान करते हैं।

इस पाठ्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह छात्रों में शोध, लेखन, सृजनात्मकता और विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करता है। गांव का इतिहास लेखन, स्वतंत्रता सेनानियों की वीर गाथा या प्रिंट मीडिया में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप अध्ययन जैसे कार्य छात्रों को सामाजिक विज्ञान, भाषा और इतिहास से जोड़ते हुए उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं। इसके साथ ही स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार अध्यापक छात्रों से विभिन्न परियोजना करवा सकते हैं, जिससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक, जीवंत और समुदाय-केंद्रित बनती है। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम छात्रों को न केवल जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है, बल्कि उनमें सामाजिक सहभागिता और संवेदनशीलता की भावना भी उत्पन्न करता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे।

1. छात्र स्थानीय लोक उत्सवों की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक महत्ता का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
2. छात्र विभिन्न लोक विश्वासों की उत्पत्ति, संरचना एवं सामाजिक प्रभावों को समझ सकेंगे।
3. छात्र प्रदेश विशेष की लोक संस्कृति से संबंधित सर्वेक्षण विधियों का प्रयोग करते हुए विश्वसनीय सामग्री का संग्रह कर सकेंगे।
4. छात्र गाँव के ऐतिहासिक संदर्भों का संकलन कर, उसका तथ्यात्मक वृत्तांत लेखन कर सकेंगे।

5. छात्र स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों एवं देशभक्तों की वीर गाथाओं का संकलन व प्रस्तुतीकरण करने में दक्ष होंगे।
6. छात्र प्रिंट मीडिया में प्रयुक्त हिंदी भाषा के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण कर सकेंगे।
7. छात्र स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप विषयवस्तु का चयन कर, सामुदायिक स्तर पर क्रियाशील हो सकेंगे।
8. छात्र सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में संवाद, सहयोग व सहभागिता की भावना विकसित कर सकेंगे।
9. छात्र प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से जानकारी संग्रह करने की क्षमता विकसित करेंगे।
10. छात्र रचनात्मक लेखन, साक्षात्कार एवं सर्वेक्षण तकनीकों के माध्यम से सामाजिक शोध कार्य करने में सक्षम होंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical reasoning	Research-related Skills	Cooperation/ Team work	Scientific reasoning	Reflective thinking	Self-directed learning	Information / Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skill	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3	3	3	3	3	3	3	2	2	3	2	3	3	2	2	3	2	2	2	2
CO-2	3	3		3	3	3	3	2	2	3	2	3	3	2	2	3		2	2	2
CO-3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	3	2	3	3	2	2	3	2	2		2
CO-4	3	3	3		3	3		2	2	3	2	3	3	2	2	3	2	2	2	2
CO-5	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	3	2	2	3	2	2	2	1
CO-6	3			3		3		2	2	2	2	2	2		2	3	2	2		1
CO-7	3		3	3		3	3	2	2	2		2		2	2	3		2	2	1
CO-8	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2		2	2	2	2	3	2	2	2	2
CO-9	3	3	3		3	3		2	2	2	2	2	2	1	2	3	2	2		1
CO-10	3	3	3	3	3	3		2	2	3	2	2	2	1	2	3	2	2	2	2
Wgt Avg	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2.5	2	2.4	2.3	1.6	2	3	2	2	2	1.6

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

सर्वेक्षण प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	1. लोक उत्सव वृत्तांत। 2. लोक विश्वास वृत्तांत। 3. प्रदेश विशेष की लोक संस्कृति के संदर्भ में सर्वेक्षण।	30
इकाई II	1. गांव का इतिहास लेखन। 2. शहीद देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानियों की वीर गाथा लेखन। 3. प्रिंट मीडिया में प्रयुक्त हिंदी का स्वरूप गत अध्ययन। * अध्यापक स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर छात्रों को और किसी विषय पर संबंधित कार्य करवा सकते हैं।	30

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30% (15 अंक)

1. 15 अंकों के लिए छात्र संगोष्टी/क्षेत्र भेंट/लिखित परीक्षा/मौखिक परीक्षा/वृत्तचित्र निर्माण/समुह चर्चा आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70% (35 अंक)

उपर्युक्त विषयों में से किसी एक विषय पर संकलित सामग्री का विश्लेषण कर 25 पृष्ठों तक परियोजना लेखन अथवा किसी एक विषय पर लघु फिल्म निर्माण करना अपेक्षित है। इसके लिए 25 अंक निर्धारित हैं। संकलित सामग्री पर मौखिकी देनी होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारतीय लोक उत्सव - डॉ. रवीन्द्र कुमार
2. भारतीय संस्कृति में उत्सवों की परंपरा - डॉ. रमा शर्मा
3. भारतीय लोक परंपरा और उत्सव - डॉ. संजीव कुमार
4. भारतीय लोक जीवन और संस्कृति - डॉ. श्यामाचरण दुबे
5. भारतीय मेले और त्योहार - डॉ. अर्चना वर्मा
6. लोक संस्कृति और लोक पर्व - डॉ. कमला श्रीवास्तव
7. इतिहास और ऐतिहासिक सामग्री - डॉ. गोविंदचंद्र पांडेय
8. इतिहास लेखन: सिद्धांत और पद्धति - डॉ. सुरेश कुमार शर्मा
9. इतिहास दर्शन और इतिहास लेखन - डॉ. महेन्द्र नारायण पांडेय

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 291 - MN	Minor	भारतीय बाल कहानियां	सैद्धांतिक	T	2

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (AIMS) :

भारतीय बाल कहानी साहित्य का मुख्य उद्देश्य बच्चों का मनोरंजन करना और उन्हें जीवन की सच्चाईयों से अवगत कराना है। साथ ही उनमें नैतिक मूल्य, संस्कार और भारतीय संस्कृति के प्रति लगाव पैदा करना है। बाल साहित्य बच्चों के मानसिक विकास में भी मदद करता है और उन्हें बेहतर नागरिक बनाने में सहायता करता है। छात्र को सही दिशा देने में इस साहित्य की विशेष भूमिका होती है। भारतीय बाल कहानी साहित्य पाठ्यक्रम अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्र में नैतिक मूल्य, संस्कार और भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम निर्माण करना है। बाल साहित्य के अध्ययन से छात्रों का मानसिक विकास होने में मदत होती है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcoms)

1. छात्र भारतीय बाल कहानी साहित्य की विकास यात्रा से परिचित होंगे।
2. छात्र बाल कहानी संकलन की कला से अवगत होंगे।
3. पठित बाल कहानियों के माध्यम से विविध भाषा के बाल कहानियों से परिचित होंगे।
4. छात्र बाल कहानी लेखक का परिचय प्राप्त करेंगे।
5. बाल कहानियों के अध्ययन से विविध भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपरा का परिचय होगा।
6. पठित बाल कहानियों के माध्यम से छात्र बाल कहानियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
7. छात्र बाल कहानियों में निहित मूल्यों से अवगत होंगे।
8. छात्र बाल कहानी साहित्य की विशेषताओं से परिचित होंगे।
9. छात्र भारतीय भाषाओं के बाल कहानी का अध्ययन करेंगे।
10. छात्र विविधता में एकता के सूत्रों की खोज करेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 2= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-Directed Learning	Information /Digital Literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	Life-long Learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	2	2	3	3	2	2	2	2		2	3		3		2	3	2	3	3	2
CO-2	2	2	3	2	2	2	2	2	2	2	3		3		2	3	2	3	2	2
CO-3	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2	1	3	1	2	3	2	2	2	2
CO-4	2	2	3	3	2	2	2	2		2	2		2			3	2	2	3	2
CO-5	2	2	3			2			3	2	3		2			3	2	3	3	2
CO-6	2	2		3			2			2	3		2	1	2	3		3	3	2
CO-7	2		3	2	2	2	2	2	2	2	3	1	3			3	2	3		2
CO-8	2	3	3	2	2	2	2	2	2	2	3		2			3	2	3	2	2
CO-9	2	2	2	2	2	2	2	2		2	2		2	1	2	3	2	3		2
CO-10	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3		2		2	3	2	2	2	2
Wgt Avg	2	2.2	2.7	2.3	2	2	2.1	2	2.1	2	2.7	1	2.4	1	2	3	2	2.7	2.5	2

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	भारतीय बाल कहानी की अवधारणा 1. सरपत की जन्म कहानी - दुर्गा भागवत 2. स्वतंत्रता का जीवन जीने वाले चूहे (कन्नड़) - गणेश वी. भरतनहल्ली 3. वह रुपया (असमिया) - डॉ. भवेंद्रनाथ शइकीया 4. चांद बाबू (उर्दू) - अतया परवीन 5. पेड़ पर चिड़िया (तेलुगु) - चोक्कपु वैंकटरमण	15
इकाई II	1. कंजूस मालिक (बांग्ला) - महाश्वेता देवी 2. शिक्षा (मलयालम) - ए. विजयन 3. क्षमा सज्जनस्य भूषणम् (तमिल) - मलैयमान 4. मतलब की दुनिया (हिंदी) - बालशोरि रेड्डी 5. मन की बात (हिंदी) - उषा यादव	15

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/लघु कथा लेखकों का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रश्न 1 - इकाई I पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। (शब्द सीमा 300) $2 \times 7 = 14$
2. प्रश्न 2 - इकाई II पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। $2 \times 7 = 14$
3. प्रश्न 3 - दोनों इकाइयों पर सात बहु पर्यायी प्रश्न। $7 \times 1 = 7$

संदर्भ ग्रंथ

1. चुनिंदा बाल कहानियां - डॉ. क्षमा शर्मा
2. प्रेरक बाल कथाएं - डॉ. जाकिर अली रजनीश
3. भारतीय बाल साहित्य का इतिहास - जयप्रकाश भारती
4. भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम - डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव
5. श्रेष्ठ बाल कहानियां - संपा. बालशौरी रेड्डी

❀✿❀

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 292 - MN	Minor	बाल कहानियाँ लेखन	प्रात्यक्षिक	P	2

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (AIMS) :

इस पाठ्यक्रम में छात्र भारतीय बाल कहानी साहित्य का प्रत्यक्ष कार्य करेंगे। भारतीय बाल कहानी साहित्य पाठ्यक्रम अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्र में नैतिक मूल्य, संस्कार और भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम निर्माण करना है। प्रत्यक्ष कार्य के दौरान छात्र अपने परिसर के बाल कहानी लेखकों से साक्षात्कार कर उनके साहित्य सृजन का ज्ञान आत्मसात करेंगे। पाठ्यक्रम की बाल कहानियों के अध्ययन के उपरांत स्वयं भी अपने भावों और विचारों को संवेदनात्मक बनाना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcoms)

1. छात्र भारतीय बाल कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
2. छात्र बाल कहानी सामग्री संकलन की कला से अवगत होंगे।
3. दृकश्राव्य माध्यमों के सहारे बाल कहानी लेखन तथा प्रस्तुति की कला प्राप्त करेंगे।
4. छात्र बाल कहानी लेखक का परिचय प्राप्त करेंगे।
5. बाल कहानियों के अध्ययन से विविध भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपरा का परिचय होगा।
6. छात्र में कल्पना शक्ति का विकास होगा और वे साहित्य सृजन कर सकेंगे।
7. छात्र बाल कहानियों में निहित मूल्यों से अवगत होंगे।
8. छात्र विविधता में एकता के सूत्रों की खोज करेंगे।
9. प्रत्यक्ष कार्य हेतु छात्र विविध स्थल, घटना से परिचित होंगे ।
10. छात्र में संवाद, अभिनय कौशल का विकास होगा।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-Directed Learning	Information /Digital Literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	Life-long Learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	**PO-2**	**PO-3**	**PO-4**	**PO-5**	**PO-6**	**PO-7**	**PO-8**	**PO-9**	**PO-10**	**PO-11**	**PO-12**	**PO-13**	**PO-14**	**PO-15**	**PSO-1**	**PSO-2**	**PSO-3**	**PSO-4**	**PSO-5**
CO-1	3	2	3	3	2	2	2	2	3	2	3	2	2	2	2	3	2	2	3	3
CO-2	3		3	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	2	2	3	2	2	2	3
CO-3	3	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2	2	2	3	2	3	2	2	2	3
CO-4	3		3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2		3	2	2	3	3
CO-5	3	2	3			2			2	2	3		2		2	3	2	2	3	2
CO-6	3			3			2		2	2	3			2	2	3		2	3	3
CO-7	3		3	2	2	2	2	2		2	3	2	2	2	2	3	2	2		2
CO-8	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	2		3	2	2	2	2
CO-9	3		2	2	2	2	2	2	3	2	2	2	2	2	2	3	2	2		2
CO-10	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	2	2	3	2	2	2	3
Wgt Avg	3	2.4	2.7	2.3	2	2	2.1	2	2.2	2	2.7	2	2	2.1	2	3	2	2	2.5	2.6

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	1. पारिवारिक रिश्तों पर जैसे: माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, दादा-दादी, (नाना- नानी, मामा -मामी आदि पर बाल कहानी लेखन का छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य। 2. पंछियों पर जैसे: गौरैया, तोता ,मैना, कौवा, मोर आदि पर बाल कहानी लेखन का छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित। 3. पर्यावरणीय तत्वों पर जैसे :नदी ,पहाड़ ,पर्वत, पेड़ जंगल, खेत, सूर्य , चंद्र, आसमान आदि पर बाल कहानी लेखन का छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित। 4. नैतिक मूल्यों पर जैसे प्रेम, त्याग, क्षमा, परोपकारिता, राष्ट्रीयता आदि पर बाल कहानी लेखन का छात्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित।	30

इकाई II	1. बाल कहानी संकलन एवं कहानी पाठ 2. बाल कहानी लेखकों से साक्षात्कार 3. बाल कहानी लेखन कौशल 4. बाल कहानी प्रस्तुति कौशल 5. इन विषयों के अलावा अध्यापक छात्रों की इच्छा अनुसार और किसी भी विषय पर बाल कहानी लिखने की अनुमति देंगे।	30

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30% (15 अंक)

1. 15 अंकों के लिए अध्ययन यात्रा/ पुस्तक परीक्षण/ क्षेत्र भेंट/ लेखक/कवि का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी/ मौखिक परीक्षा/ लिखित परीक्षा / परियोजना / क्षेत्रीय भेंट / ग्रंथालय कार्य / समूह चर्चा / प्रस्तुति / शोध परियोजना आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70% (35 अंक) प्रात्यक्षिक सत्रांत परीक्षा।

1. **प्रश्न 1 और 2** - इकाई I और II पर 10 + 10 = 20 अंको के लिए भारतीय बाल कहानी संबंधी कौशलाधारित कार्य छात्रों से प्रत्यक्ष करवाना होगा।

   प्रश्न 3 - इकाई I और II पर सृजनात्मक विकास और बाल कहानी लेखन कौशलाधारित छात्रों की मौखिकी लेनी होगी। मौखिकी के लिए 15 अंक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. चुनिंदा बाल कहानियां- डॉ. क्षमा शर्मा
2. प्रेरक बाल कथाएं - डॉ. जाकिर अली रजनीश
3. भारतीय बाल साहित्य का इतिहास - जयप्रकाश भारती
4. भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम - डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव
5. श्रेष्ठ बाल कहानियां - संपा. बालशौरी रेड्डी

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन
OE/GE Course 2 credit Practical

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 271 - OE	OE/GE	हिंदी गीत और एकांकी लेखन	प्रात्यक्षिक	P	2

पाठ्यक्रम का लक्ष्य (Aims) :

'हिंदी गीत और एकांकी लेखन' विषय पर केंद्रित इस प्रात्यक्षिक कार्य पाठ्यक्रम से छात्रों में रचनात्मकता, सामाजिक चेतना एवं अभिव्यक्ति कौशल विकसित करना है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को साहित्यिक सृजन कला सिखाने के साथ-साथ उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान करना है। गीत और एकांकी जैसी विधाएँ छात्रों की संवेदनशीलता, कल्पनाशक्ति तथा संप्रेषणीयता को सशक्त बनाती हैं। यह पाठ्यक्रम उन्हें राष्ट्रभक्ति, पर्यावरण संरक्षण, सांप्रदायिक सौहार्द, प्रेम, हास्य-व्यंग्य जैसे विविध विषयों पर सोचने, लिखने और मंचन करने की प्रेरणा देता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी सामाजिक सरोकारों को समझने, अभिव्यक्त करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में संवाद स्थापित करने में सक्षम बनते हैं। साथ ही यह पाठ्यक्रम छात्र के आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और समूह कार्य जैसे व्यावहारिक जीवन कौशलों का भी विकास करता है, जिससे वे साहित्य के क्षेत्र में तथा जीवन में प्रभावी संप्रेषक बन सकें।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

1. यह प्रात्यक्षिक कार्य पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात छात्र गीत रचना और एकांकी लेखन कर सकेंगे।
2. सामाजिक, ऐतिहासिक तथा पर्यावरण आदि विषयों पर मौलिक लेखन कर सकेंगे।
3. छात्र अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना सीखेंगे।
4. उन्हें हिंदी भाषा में सही उच्चारण और भावों के साथ बोलने का अभ्यास होगा।
5. छात्र समूह में कार्य करना और नेतृत्व करना सीखेंगे।
6. छात्र अपने अंदर छिपी रचनात्मकता को पहचानकर आगे बढ़ पाएँगे।
7. समाज की समस्याओं को समझकर उस पर लिखना और विश्लेषण करना सीखेंगे।
8. लोक संस्कृति और परंपराओं को अपने लेखन में जोड़ पाएँगे।
9. नाटक और गीतों के माध्यम से अपनी संवेदना को व्यक्त करना सीखेंगे।
10. अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट और रचनात्मक रूप से लोगों तक पहुँचा सकेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related Skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-directed learning	Information /Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3	3	2		2				2	2			2		2	3	3		2	2
CO-2		2	2		2				2	2					2	3	3		2	2
CO-3		3	2		2					2	1	1			2	3	3			2
CO-4		3	2		2					2					2	3	3			2
CO-5		2		2	2		3		2	2				2	2	3	3		2	3
CO-6					2				2	2	1	1			2		2			2
CO-7			3	3	3	3		1		2					2	3	2	3		
CO-8			2		2				2	2			2		2	3	2			
CO-9			3		2			1	2	2			2		2	3	2			
CO-10			2		2				2	2	1	1	2		2	3	2			
Wgt Avg	3	2.6	2.2	2.5	2.1	3	3	1	2	2	1	1	2	2	2	3	2.5	3	2	2.1

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	**हिंदी गीत लेखन एवं प्रस्तुति** छात्रों से राष्ट्रभक्ति,पर्यावरण संवर्धन, सामाजिक समस्या, मानवीय मूल्य, जीवन मूल्य, लोक संस्कृति, प्रेम, सांप्रदायिक सौहार्द, वीर, हास्य-व्यंग्य आदि विषय, भाव संबंधी गीत लेखन एवं प्रस्तुति कार्य अपेक्षित है। *उक्त विषयों के अलावा अध्यापक छात्रों द्वारा अन्य किसी विषय पर प्रत्यक्ष कार्य अपेक्षित है।	30
इकाई II	**एकांकी लेखन एवं प्रस्तुति:** छात्रों से राष्ट्रभक्ति, वीर रस ,पर्यावरण संवर्धन, मानवीय मूल्य, सांप्रदायिक सौहार्द्र, प्रेम, हास्य-व्यंग्य, सामाजिक समस्या आदि विषय,भाव संबंधी एकांकी लेखन एवं प्रस्तुति अपेक्षित है। *उक्त विषयों के अलावा अध्यापक छात्रों द्वारा अन्य किसी विषय पर प्रत्यक्ष कार्य करवा सकते हैं।	30

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30% (15 अंक)

1. 15 अंकों के लिए अध्ययन यात्रा/ पुस्तक परीक्षण/ क्षेत्र भेंट/ एकांकी लेखक/गीतकार का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी/ मौखिक परीक्षा/ लिखित परीक्षा / परियोजना / क्षेत्रीय भेंट / ग्रंथालय कार्य / समूह चर्चा / प्रस्तुति / शोध परियोजना आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70% (35 अंक) प्रात्यक्षिक सत्रांत परीक्षा।

1. **प्रश्न** 1 **और** 2 - इकाई I और II पर 10 + 10 = 20 अंको के लिए गीत और एकांकी संबंधी कौशलाधारित कार्य छात्रों से प्रत्यक्ष करवाना होगा। जैसे - गीत और एकांकी का मौलिक लेखन, वाचन एवं मूल्यांकन आदि।

   प्रश्न 3 - इकाई I और II पर सृजनात्मक विकास और गीत तथा एकांकी लेखन कौशलाधारित छात्रों की मौखिकी लेनी होगी। मौखिकी के लिए 15 अंक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी गीतों का इतिहास और विकास, हरिवंश नंदन, हिंदी साहित्य संस्थान, दिल्ली
2. गीतों का सौंदर्यशास्त्र, सुमित्रानंदन कुमार, पुस्तक बंधु, इलाहाबाद
3. हिंदी काव्य और गीत: एक ऐतिहासिक दृष्टि, शिवपूजन सहाय, साहित्यिक प्रकाशन, पटना
4. हिंदी साहित्य का काव्य तत्व, शंकर चतुर्वेदी, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मुंबई
5. हिंदी कविता और गीत साहित्य में लोक तत्व, रतनलाल शर्मा, लोक साहित्य संस्थान, जयपुर
6. आधुनिक हिंदी कविता और गीत, महादेवी वर्मा, पेंग्विन बुक्स, दिल्ली
7. हिंदी गीतों में भक्ति और रूमानी तत्व, राधाकृष्ण सिंह, साहित्य धारा, दिल्ली
8. हिंदी एकांकी: विकास और प्रवृत्तियाँ, शिवराम काव्य, आदर्श साहित्य संस्थान, कानपुर
9. हिंदी नाटक और एकांकी की समीक्षा, नवल किशोर, नाट्य संस्थान, वाराणसी
10. हिंदी नाटक और एकांकी, मुंशी प्रेमचंद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. एकांकी नाटक और उसका सामाजिक संदर्भ, सोमनाथ शर्मा, सृजन साहित्य प्रकाशन, जयपुर
12. हिंदी एकांकी: एक नाट्य विधा का विकास, शंकर कुमार, साहित्य विमर्श, लखनऊ
13. एकांकी नाटक: भारतीय नाट्य परंपरा में एक नूतन प्रयोग, शारदा दत्त, भारतीय नाट्य साहित्य, कोलकाता
14. हिंदी एकांकी नाटक: समकालीन विकास और प्रवृत्तियाँ, रवींद्रनाथ सिंह, नाट्य विमर्श, मुंबई
15. हिंदी एकांकी और समकालीन नाटककार, भूपेंद्र टंडन, साहित्य प्रवाह, दिल्ली

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन
SEC Course 2 credit Practical

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 251 - SEC	SEC	व्यावहारिक हिंदी	प्रात्यक्षिक	P	2

लक्ष्य (Aims) :

वर्तमान समय में इस पाठ्यक्रम का अत्यंत महत्व है क्योंकि यह छात्रों के भाषायी कौशल को विकसित करने में सहायक है। निबंध लेखन के विभिन्न प्रकार जैसे-वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक और साहित्यिक आदि प्रकार के निबंध छात्रों की सोचने, समझने और अभिव्यक्त करने की क्षमता को मजबूत बनाते हैं। पत्र लेखन जैसे आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, आदेश एवं ज्ञापन उन्हें व्यावहारिक जीवन में संवाद स्थापित करने की विधियाँ समझानी हैं। ये सभी लेखन कौशल प्रतियोगी परीक्षाओं, कार्यालयीन कार्यों और सामाजिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होते हैं। इसके अलावा हिंदी पर्यायवाची शब्द, वाक्य शुद्धिकरण तथा गद्यांश के प्रश्नोत्तर से भाषा की स्पष्टता, शुद्धता और समझ की गहराई में वृद्धि होती है।

स्ववृत्त तैयार करना, शब्द युग्मों का अर्थ एवं प्रयोग, साथ ही मुहावरों की जानकारी विद्यार्थियों को न केवल भाषा में प्रवीण बनाती है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक समझ और अभिव्यक्ति क्षमता को भी समृद्ध करती है। आज के डिजिटल युग में जहाँ प्रभावशाली लेखन और संवाद आवश्यक बन चुका है, वहां यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को एक सशक्त वक्ता और लेखक बनने की दिशा में प्रेरित करता है। यह न केवल परीक्षा की दृष्टि से बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में प्रभावशाली और व्यावहारिक भाषा का प्रयोग सिखाता है इससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे समाज में अपनी बात सही तरीके से रख पाते हैं।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे।

1. छात्र वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक एवं साहित्यिक निबंधों की रचना करने में सक्षम होंगे।
2. विभिन्न प्रकार के पत्र जैसे आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, आदेश और ज्ञापन को उचित प्रारूप में लिख सकेंगे।
3. सामान्य रूप से प्रयोग होने वाले हिंदी पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर सकेंगे और उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कर सकेंगे।
4. अशुद्ध वाक्यों की पहचान कर उन्हें शुद्ध करने की क्षमता विकसित करेंगे।
5. छात्र दिए गए गद्यांश को पढ़कर उसके आधार पर प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे।

6. आत्मपरिचय अथवा स्ववृत्त (स्वपरिचय पत्र) को सही क्रम और भाषा में प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे।
7. शब्द युग्मों के अर्थ समझकर उन्हें उचित संदर्भ में वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।
8. हिंदी मुहावरों का अर्थ समझ सकेंगे और उनका सही वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
9. लेखन कौशल में सुधार लाते हुए रचनात्मक एवं प्रभावी भाषा का प्रयोग कर सकेंगे।
10. व्याकरणिक एवं रचनात्मक अध्ययन के माध्यम से हिंदी भाषा की समझ और अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित कर सकेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical reasoning	Research-related Skills	Cooperation/ Team work	Scientific reasoning	Reflective thinking	Self-directed learning	Information / Digital literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	leadership Readiness	life-long learning	Domen Knowledge	Professional Skill	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	2	1	3	2	2	1	1
CO-2	3	3	1		1		1	1	1	2	1		1	1		3	2	1	1	1
CO-3	3	3	2		1	1				1	1			1		3	1	1		1
CO-4	3	3	2		2	1		1	1	1	1			1	1	3	1	1		1
CO-5	3	3	2		3	2		2	2	2	1			1	1	3	1	1		1
CO-6	3	3	2	2	2	2	1	1	1	1			1	2	1	3	1	1	1	2
CO-7	3	3	1		1	1		1	1	1	1	1		1	1	3	1	1		1
CO-8	2	3	1	1	1	1	1	1	1	1		1	1	1	1	3	1	1	1	1
CO-9	3	3	1		1	1				1	1					3	2	1		1
CO-10	3	3	1		1			1		1				1	1	3	3	1		1
Wgt Avg	3	3	1.5	1.6	1.5	1.3	1.2	1.2	1.2	1.3	1	1	1	1.2	1	3	1.5	1.1	1	1.1

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	1. निबंध लेखन: वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक और साहित्यिक। 2. पत्र लेखन: आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, आदेश, ज्ञापन। 3. हिंदी पर्यायवाची शब्द (50 शब्द) 4. वाक्य शुद्धीकरण।	30
इकाई II	1. गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर। 2. स्ववृत्त तैयार करना 3. शब्द युग्म का अर्थ और वाक्य प्रयोग। (50 शब्द युग्म) 4. मुहावरों का अर्थ और वाक्य प्रयोग। (25 मुहावरे)	30

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30% (15 अंक)

1. 15 अंकों के लिए लघुत्तरी परीक्षा/मुहावरे/शब्दयुग्म/पर्यायवाची शब्द संकलित करना/छात्र संगोष्ठी आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70% (35 अंक) प्रात्यक्षिक संत्रात परीक्षा

1. **प्रश्न** 1 इकाई I पर सात अंकों के लिए निबंध अथवा पत्र लेखन कौशलाधारित कार्य छात्रों से प्रत्यक्ष करवाना होगा। दोनों में से एक लिखना 7 अंकों के लिए।

   प्रश्न 2 इकाई I पर 14 हिंदी पर्यायवाची शब्द अथवा सात वाक्यों का वाक्य शुद्धिकरण 7 अंकों के लिए कार्य छात्रों प्रत्यक्ष करवाना होगा।

   प्रश्न 3 इकाई II पर गद्यांश के आधार पर (सात प्रश्न) प्रश्नोत्तर अथवा स्ववृत्त तैयार करना। दोनों में से एक लिखना 7 अंकों के लिए।

   प्रश्न 4 इकाई II पर चौदह अंकों के लिए शब्द युग्मों का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग करना अथवा मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करना। (दोनों में से एक लिखना 14 अंकों के लिए)

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी की मानक वर्तनी - कैलाशचंद्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण - 2006।
2. हिंदी भाषा - भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण - 2004।
3. विशुद्ध हिंदी - डॉ. सदानंद भोसले, विकास प्रकाशन, कानपुर।

हिंदी पर्यायवाची शब्द (50 शब्द)

अ.क्र.	हिंदी शब्द	हिंदी पर्यायवाची शब्द
1.	अंक	चिन्ह, कोड़, गोद, नाटकांश, रेखा, विभूषण, समीप, कटी-प्रदेश शरीर, संख्या।
2.	अंजन	सुरमा, काजल, लेप, कज्जल, मासि।
3.	अचल	स्थिर, पर्वत, दृढ़, अकंप, शिव।
4.	अन्न	अनाज, धान्य, शस्य, दाना, गल्ला, बीव, भोग्य, आद्द, स्तबंकरि।
5.	आकाश	अंतरिक्ष, अंबर, अक्षर, अनंत, द्दी, अभ्र, व्योम, नभ, महाबिल, गगन, मेघवेश्म, शून्य, अर्णव, अर्श, अवकाश, आसमान, खगोल, स्वर्ग।
6.	आख्यान	कथा, कहानी, आख्यायिका, प्रसंग, प्रकरण।
7.	इतिहास	पुरावृत्र, तवारीख, पुराख्यान, पुराकथा।
8.	उत्कृष्ट	श्रेष्ठ, उत्त्रम, सर्वोच्च, उन्नत।
9.	ऊष्मा	ऊष्णता, ताप, गर्मी, तपन।
10.	एकांत	निर्जन, विजन, निमृत।
11.	ऐंठ	हेकड़ी, अकड़, ठसक, घमंड, विरोध।
12.	ओंठ	होंठ, रदच्छद, अधर, दंतवास, दंतवस्त्र।
13.	औकात	बिसात, वित्त, शक्ति, सामर्थ्य, हैसियत।
14.	कांता	प्रिया, प्रेमिका, सुंदरी, गहस्वामिनी, पत्नी, भायी।
15.	कुंभ	घड़ा, जलपात्र, कलश, करवा।
16.	कृपा	दया, अनुग्रह, अनुकंपा, क्षमा।
17.	क्षय	नाश, लय, कल्पांत, अंत, निलय, रोग।
18.	खाट	खटवा, खटिया, चारपाई, खटोला, पलंग, मंजी, मंचिता, शैय्या।
19.	गऊ	गाय, सुरभि, तबिंका, धेनु, दुग्धा, उसा, रोहिणी, माहेयी, गौ, गऊ, गैय्या।
20.	घोर	भीषण, भयंकर, भयानक, अत्याधिक, दुर्गम, घना, सघन, गहन, कठिन, बुरा।
21.	चंपक	चंपा, चांपेय, हेमपुष्पक।
22.	चाकर	नौकर, सेवक, दास, अनुचर, अर्थी, अनुजीवी।
23.	छात्र	विद्यार्थी, शिष्य, शिक्षार्थी, अध्येता।
24.	जनक	पिता, जनयिता, प्रणेता, जन्मदाता, वप्र, बाप, वप्ता।
25.	जननी	माता, प्रसू, प्रसविनी, अंबा, माँ, अंबिका, जनी, जनयित्री, जनित्री, जा, माई।
26.	झंडा	पताका, ध्वज, निशान, केतु, चिन्ह।
27.	टीस	कसक, पीर, चसक, हुक।
28.	ठोस	दृढ़, मजबूत, सख्त।
29.	डांट	फटकार, डपट, घुड़की।
30.	ढिंढोरा	घोषणा, उद्घोषणा, डौंडी, डुगडुगी, मुनादी।
31.	तकदीर	नसीब, भाग्य, प्रारब्ध, नियति, अइष्ट, किस्मत।
32.	थाह	अंत, हद, तल, गहराई, पता, अंदाज, अनुमान, गाध।
33.	दगा	छल, कपट, धोखा, विश्वातधात।
34.	देश	मुल्क, प्रदेश, प्रांत, क्षेत्र, विभाग, संस्थान।
35.	धर्म	दीन, ईमान, पंथ, मत, संप्रदाय, मजहब।
36.	धिक्कार	लानत, फटकार, अपमान, अनादर, घृणा।
37.	नफा	लाभ, फायदा, मुनाफा।

38.	निपुण	चतुर, प्रवीण, कुशल, दक्ष, पटू, योग्य, निष्णात, सक्षम।
39.	पदवी	उपाधि, पद, प्रतिष्ठा, दर्जा, मर्यादा, स्थान।
40.	प्रतिज्ञा	निश्चय, प्रण, संकल्प, शपथ।
41.	फुल	पुष्प, फुल्ल, पीलू, समद, प्रसून, कुसुम, मणीचक, सगुफा, माल्य, सारंग, गुल।
42.	बोध	प्रत्यक्ष ज्ञान, समझ, जानकारी, प्रतिभा, जागृति।
43.	भाई	भ्राता, सहोदर, सोदर, सहज, सगर्भ।
44.	मोहन	मोहक, सुंदर, आकर्षक, रमणीय, अभिराम।
45.	यौवन	तारुण्य, तरुणाई, युवावस्था, जवानी।
46.	रक्षक	रखवाला, अभिभावक, प्रहरी, चौकीदार, संरक्षक, त्राता।
47.	लापता	गुम, गुमशुदा, गुप्त, गायब, लुप्त।
48.	वंशी	बांसुरी, मुरली, वेणु।
49.	शूर	वीर, पराक्रमी, सूरमा, विक्रांत, बहादुर, योध्दा।
50.	हद	सीमा, पराकाष्ठा, चरमावस्था मर्यादा।

शब्द युग्म का अर्थ और वाक्य प्रयोग। (50 शब्द युग्म)

अ.क्र.	शब्द युग्म और अर्थ
1.	आवास - वासस्थान आभास - झलक
2.	उपकार -भलाई अपकार -बुराई
3.	कुल- वंश कूल- किनारा
4.	कृति- रचना कृती-निपुण, पुण्यआत्मा
5.	कली -आधखिला फूल कलि - कलियुग
6.	कृपाण- कटार कृपण- कंजूस
7.	कोष - खजाना कोश- शब्द संग्रह
8.	ग्रह -सूर्य, चंद्र आदि गृह- घर
9.	चिर -पुराना चीर -कपड़ा
10.	जलज -कमल जलद -बादल
11.	टुक- थोड़ा टूक - टुकड़ा
12.	तरणि - सूर्य तरणी - नाव

13.	तरी- गीलापन तरि -नाव
14.	दिन- दिवस दीन- गरीब
15.	द्विप -हाथी द्वीप- टापू
16.	दिवा- दिन दीवा- दिया, दीपक
17.	नीरज -कमल नीरद- बादल
18.	पानी -जल पाणि- हाथ
19.	पीक- पान आदि का थूक पिक -कोयल
20.	पावन- पवित्र पवन - वायु
21.	परीक्षा -इम्तहान परिक्षा — कीचड़
22.	पूर- बाढ़, आधिक्य पुर - नगर
23.	बलि- बलिदान बली -वीर
24.	बुरा- खराब बूरा- शक्कर
25.	बहु -बहुत बहू - पुत्रवधू, ब्याही स्त्री
26.	मणि- रत्न मणी- सर्प
27.	वास्तु -चीज वास्तु- मकान, इमारत
28.	सर-तालाब, सिर शर -बाण, तीर
29.	सूर- अंधा, सूर्य सुर- देवता लय
30.	सुत -बेटा सूत - सारथी, धागा
31.	शूचि -शूची सूची- विषयक्रम
32.	शम- संयम, इंद्रियनिग्रह सम- समान
33.	सुमन - फूल सुअन- पुत्र

34.	स्वर्ग - तीसरा लोक सर्ग- अध्याय
35.	शर्व -शिव सर्व -सब
36.	सुखी-आनंदित सखी -सहेली
37.	सुधी- विद्वान, बुद्धिमान सुधि- स्मरण
38.	शप्त- शाप पाया हुआ सप्त- सात
39.	शहर - नगर सहर- सबेरा
40.	शाला-घर, मकान साला- पत्नी का भाई
41.	शीशा- काँच सीसा- एक धातु
42.	श्वेत -उजाला स्वेद- पसीना
43.	शती- सैकड़ा सती- पतिव्रता स्त्री
44.	संग- साथ संघ- समिति
45.	संदेह -शक सदेह -देह के साथ
46.	शान -इज्जत, तड़क-भड़क शाण- धार तेज करने का पत्थर
47.	शूक-जौ शुक- सुग्गा, तोता
48.	शिखर- चोटी शेखर-सिर
49.	हरि- विष्णु हरी- हरे रंगा की
50.	डीठ -दृष्टि ढीठ- निडर

मुहावरों का अर्थ और वाक्य प्रयोग। (25 मुहावरे)

अ.क्र.	मुहावरे	मुहावरों का अर्थ
1.	अंगार बनना -	लाल होना, कुछ होना।
2.	अंगारों पर पैर रखना -	जान-बूझकर हानिकारक कार्य करना।
3.	अँगूठा दिखाना-	समय पर धोखा देना।
4.	अंधे की लकड़ी -	एक ही सहारा।
5.	अक्ल पर पत्थर पड़ना-	बुद्धिभ्रष्ट होना।
6.	अपने मुँह मियाँ मिट्टू होना-	अपनी बड़ाई आप करना।
7.	ईट का जवाब पत्थर से देना -	किसी की दुष्टता का करारा जवाब देना।
8.	ईद का चाँद होना -	बहुत दिनों पर दीखना।
9.	उल्टी गंगा बहाना -	प्रतिकुल कार्य।
10.	कलम तोड़ना -	बढ़िया लिखना।
11.	काँटा निकलना -	बाधा दूर होना।
12.	खरी-खोटी सुनाना -	भला-बुरा कहना।
13.	खून-पसीना एक करना	कठिन परिश्रम।
14.	गिरगिट की तरह रंग बदलना -	एक रंग ढंग पर न रहना।
15.	गूलर का फूल होना -	लापता होना।
16.	घोड़े बेचकर सोना -	बेफिक्र होना।
17.	घर का न घाट का -	कहीं का नहीं।
18.	चादर के बाहर पैर पसारना -	आय से अधिक व्यय करना।
19.	जहर उगलना -	अपमानजनक बात कहना।
20.	जूते चाटना -	चापलूसी करना।
21.	टाँग अड़ाना -	अड़चन डालना।
22.	तूती बोलना -	प्रभाव जमाना।
23.	पाँचौ उँगलियाँ घी में -	पूरे लाभ में।
24.	लोहा मानना -	श्रेष्ठ समझना।
25.	हाथ मलना -	पछताना।

द्वितीय वर्ष कला (हिंदी) द्वितीय वर्ष / चतुर्थ अयन

AEC Course 2 Credit Theory

विषय कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक		Theory/Practical		कर्मांक
HIN - 281 - AEC	AEC	हिंदी भाषा क्षमता संवर्धन भाग II	सैद्धांतिक	T	2
प्रस्तुत पाठ्यक्रम कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा संगणक विज्ञान आदि द्वितीय वर्ष की सभी कक्षाओं के लिए है :- **S.Y.B.A./ S.Y.B.Sc (Regular)/ S.Y.B.Com/ S.Y.B.Sc.(Computer Science - BCS)/ S.Y.B.Sc (Computer Application - BCA)/ S.Y.B.B.A.(CA)/ S.Y.B.Com-BM/ S.Y.B.Com-CA/ S.Y.B.Com-IB/ S.Y.B.Sc (Data Science)**					

लक्ष्य (Aims) :

यह पाठ्यक्रम छात्रों की भाषा संबंधी मूलभूत समझ को विकसित करने में सहायक है। इसमें विशेषण, क्रिया, वचन, लिंग, कारक और विभक्ति जैसे व्याकरण के महत्वपूर्ण पक्षों को शामिल किया गया है। जो किसी भी भाषा की संरचना को समझने के लिए आवश्यक हैं। विशेषणों के प्रकार जैसे सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्यावाचक विशेषण, वाक्य को अधिक स्पष्ट और प्रभावी बनाते हैं। इसी प्रकार क्रिया के भेद, जैसे सकर्मक और अकर्मक क्रिया, वाक्य की क्रियात्मकता को समझने में मदद करते हैं। वचन और लिंग का ज्ञान छात्रों को भाषा की सही प्रयोग पद्धति सिखाता है। इस तरह व्याकरण की इन विषय वस्तुओं से छात्रों की लेखन और भाषण शैली सशक्त बनती है।

इस पाठ्यक्रम में केवल व्याकरणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि साहित्यिक विधाओं का भी समावेश किया गया है, जैसे ग़ज़ल और यात्रा वृत्तांत। ग़ज़ल के माध्यम से छात्र हिंदी साहित्य की कोमल भावनाओं और काव्य सौंदर्य से परिचित होते हैं। वहीं यात्रा वृत्तांत से वर्णनात्मक लेखन क्षमता का विकास होता है। वाक्य के प्रकार - साधारण, मिश्र और संयुक्त वाक्य - छात्रों को विचारों को क्रमबद्ध और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की कला सिखाते हैं। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम न केवल विद्यार्थियों की भाषा क्षमता को मज़बूत करता है, बल्कि उनमें साहित्यिक रुचि और रचनात्मकता का भी विकास करता है। जो समग्र भाषा शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे।

1. छात्र विशेषण के प्रकारों की पहचान कर सकेंगे तथा उपरोक्त संदर्भ में उनका प्रयोग कर सकेंगे।
2. सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाओं में भेद कर सकेंगे तथा वाक्य में उनका सही प्रयोग कर सकेंगे।
3. वचन के भेद (एकवचन और बहुवचन) को समझकर सही रूप में वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।
4. लिंग (पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग) के भेदों को पहचान सकेंगे और व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध प्रयोग कर सकेंगे।

5. कारक और विभक्तियों की पहचान कर सकेंगे तथा उनका उपयुक्त प्रयोग करना सीखेंगे।
6. वाक्य के भेद (साधारण, मिश्र, संयुक्त) को समझ सकेंगे और विभिन्न प्रकार के वाक्य बना सकेंगे।
7. ग़ज़ल के साहित्यिक स्वरूप एवं उसकी विशेषताओं को समझ सकेंगे।
8. यात्रा वृत्तांत की शैली और भाषा का विश्लेषण कर सकेंगे।
9. व्याकरण और साहित्य का संयोजन कर रचनात्मक लेखन करने में सक्षम होंगे।
10. हिंदी भाषा के व्याकरण और साहित्य का आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

MAPPING PROGRAM OUTCOMES WITH COURSE OUTCOMES & LEVEL OF MAPPING

[3= Fully Met, 2= Partially Met, 1= Poorly Met, Blank= Not Met]

Graduate Attributes	Disciplinary Knowledge	Communication Skills	Critical Thinking	Problem Solving	Analytical Reasoning	Research-related skills	Cooperation/Team Work	Scientific Reasoning	Reflective Thinking	Self-Directed Learning	Information /Digital Literacy	Multicultural Competence	Moral & Ethical Values	Leadership Readiness	Life-long Learning	Domen Knowledge	Professional Skills	Research	Social Responsibility	Personality Development
	PO-1	PO-2	PO-3	PO-4	PO-5	PO-6	PO-7	PO-8	PO-9	PO-10	PO-11	PO-12	PO-13	PO-14	PO-15	PSO-1	PSO-2	PSO-3	PSO-4	PSO-5
CO-1	2	2	3	3	2	2	2	2	3	2	3	3	2	2	2	3	2	2	3	2
CO-2	2		3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2		3	2	2	2	2
CO-3	3	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2	3	2	2	2	3	2	2	2	3
CO-4	3		3	3	2	2	2	2	3	2	2	3	2	2	2	3	2	2	3	3
CO-5	3	2	3			2			2	2	3	3	2	2		3	2	2	3	2
CO-6	2			3			2		3	2	3	3		2	2	3		2	3	3
CO-7	2		3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2		3	2	2		2
CO-8	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2
CO-9	3		2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	2	2	2	3	2	2		2
CO-10	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	3	3	2	2	2	3	2	2	2	2
Wgt Avg	2.6	2.4	2.7	2.3	2	2	2.1	2	2.3	2	2.7	3	2	2	2	3	2	2	2.5	2.3

शिक्षा विधि (Pedagogy) :

व्याख्यान विधि, विश्लेषण विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष कार्य विधि।

इकाई	पाठ्यविषय	तासिकाएँ
इकाई I	**व्याकरणिक हिंदी:** 1. विशेषण के प्रकार: सार्वनामिक विशेषण, गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण। 2. क्रिया के भेद: सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया।	15

<table>
<tr><td></td><td>3. वचन के भेद: एक वचन, बहुवचन।
4. लिंग के भेद: पुल्लिंग, स्त्रीलिंग।
5. कारक और विभक्तियां: कारक के भेद।
6. वाक्य के प्रकार: साधारण वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य।</td><td></td></tr>
<tr><td>इकाई II</td><td>साहित्य परिचय (ग़ज़ल, यात्रा वृत्तांत)

ग़ज़ल
1. भूला हुआ था आज तलक - शमशेर बहादुर सिंह
भूला हुआ था आज तलक अपने घर को मैं
क्या जाने चल दिया था कहाँ के सफ़र को मैं

तुम मुस्कुरा रहे थे मुझे देख-देख कर
अपनी समझ रहा था हरेक की नज़र को मैं

गर्दिश से उन निगाहों को कुछ होश आ गया
दुशमन समझ रहा था ख़ुद अपनी नज़र को मैं

ऐसे भी मोड़ आए हैं चुपचाप बार-बार
तकता था राहबर मुझे और राहबर को मैं

‘शमशेर’ और कुछ नहीं दुनिया जहान में
इक दिल है, ढूंढता हूँ, उसी बेख़बर को मैं

2. हो गई है पीर पर्वत-सी... - दुष्यंत कुमार
हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

3. धूप में निकलो... निदा फाजली
धूप में निकलो घटाओं में नहा कर देखो
ज़िंदगी क्या है किताबों को हटा कर देखो

सिर्फ़ आँखों से ही दुनिया नहीं देखी जाती
दिल की धड़कन को भी बीनाई बना कर देखो

पत्थरों में भी ज़बाँ होती है दिल होते हैं
अपने घर के दर-ओ-दीवार सजा कर देखो

वो सितारा है चमकने दो यूँही आँखों में</td><td>15</td></tr>
</table>

	क्या ज़रूरी है उसे जिस्म बना कर देखो फ़ासला नज़रों का धोका भी तो हो सकता है वो मिले या न मिले हाथ बढ़ा कर देखो 4. **तुम्हारी फाइलों में... - अदम गोंडवी** तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है मगर ये आंकड़े झूठे हैं ये दावा किताबी है उधर जम्हूरियत का ढोल पीते जा रहे हैं वो इधर परदे के पीछे बर्बरीयत है, नवाबी है लगी है होड़ - सी देखो अमीरी औ गरीबी में ये गांधीवाद के ढाँचे की बुनियादी खराबी है तुम्हारी मेज़ चांदी की तुम्हारे जाम सोने के यहाँ जुम्मन के घर में आज भी फूटी रक़ाबी है 5. **जिंदगी के लिए - ज्ञानप्रकाश विवेक** ज़िन्दगी के लिए इक ख़ास सलीक़ा रखना अपनी उम्मीद को हर हाल में ज़िन्दा रखना उसने हर बार अँधेरे में जलाया ख़ुद को उसकी आदत थी सरे-राह उजाला रखना आप क्या समझेंगे परवाज़ किसे कहते हैं आपका शौक़ है पिंजरे में परिंदा रखना बंद कमरे में बदल जाओगे इक दिन लोगो मेरी मानो तो खुला कोई दरीचा रखना क्या पता राख़ में ज़िन्दा हो कोई चिंगारी जल्दबाज़ी में कभी पाँव न अपना रखना वक्त अच्छा हो तो बन जाते हैं साथी लेकिन वक़्त मुश्किल हो तो बस ख़ुद पे भरोसा रखना **यात्रा वृत्तांत:** 1. तिब्बत के पथ पर - राहुल सांकृत्यायन 2. देवताओं के अंचल में - अज्ञेय 3. धरती का स्वर्ग - विष्णु प्रभाकर	

अंक विभाजन:

आतंरिक मूल्यांकन - 30%

1. 15 अंकों की लघुत्तरी परीक्षा/किसी शायर या यात्रकार का साक्षात्कार/छात्र गोष्ठी/क्षेत्र भेंट आदि।

सत्रांत परीक्षा - 70%

1. प्रश्न 1 - इकाई i पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। (शब्द सीमा 300)

$2 \times 7 = 14$

2. प्रश्न 2 - इकाई ii पर चार प्रश्न, जिसमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। $2 \times 7 = 14$

3. प्रश्न 3 - दोनों इकाइयों पर सात बहु पर्यायी प्रश्न। $7 \times 1 = 7$

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी की मानक वर्तनी - कैलाशचंद्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण - 2006।
2. हिंदी भाषा - भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण - 2004।
3. विशुद्ध हिंदी - डॉ. सदानंद भोसले, विकास प्रकाशन, कानपुर।
4. सुकून की तलाश - शमशेर बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. साये में धूप - दुष्यंत कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. खोया हुआ सा कुछ - निदा फाजली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. धरती की सतह पर - अदम गोंडवी, अनुज प्रकाशन (उ. प्र.)
8. धुप के हस्ताक्षर - ज्ञानप्रकाश विवेक, कादंबरी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. हिंदी यात्रा साहित्य : स्वरुप और विकास - डॉ. रामविलास शर्मा